सितम्बर 2023

G20
भारत 2023 INDIA

मन की बात

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी का सम्बोधन

सूची क्रम

01 **प्रधानमंत्री का सन्देश** 1

02 **मुख्य आलेख**

2.1 **G20 नई दिल्ली लीडर्स डिक्लेरेशन :** वैश्विक सहयोग का शिखर 14

2.2 **स्वच्छता ही सेवा :** प्रण से क्रियान्वयन तक 46

03 **संक्षेप में**

3.1 **UNESCO वर्ल्ड हेरिटेज साइट्स** दे रहा भारत की सांस्कृतिक धरोहरों को वैश्विक पहचान 28

3.2 **सीमाओं के परे संगीत :** कसैंड्रा मे का भारतीय कनेक्ट 38

3.3 **सभी के लिए शिक्षा :** युवा-संचालित अनोखी पहलें 40

3.4 **वन्यजीव संरक्षण में सामुदायिक भागीदारी** 42

3.5 **भारत का कर्तव्य काल :** कर्तव्य का आह्वान और विकास का वादा 44

04 **लेख व साक्षात्कार**

4.1 इंडिया-मिडिल ईस्ट-यूरोप इकोनॉमिक कॉरिडोर : व्यापार के नए अवसर : **संजय सुधीर** 26

4.2 विश्व विरासत सूची में भारत की दो नई धरोहर शामिल : **विशाल शर्मा** 32

4.3 गुरुदेव के विज़न और योगदान को विश्व में सम्मान : **बिद्युत चक्रवर्ती** 34

4.4 होयसला मंदिर : वास्तुकला की समृद्ध विरासत : **प्रो. एन. एस. रंगराजू** 36

05 **प्रतिक्रियाएँ** 53

प्रधानमंत्री का सन्देश

मेरे प्यारे परिवारजनो, नमस्कार।

'मन की बात' के एक और एपिसोड में मुझे आप सभी के साथ देश की सफलता को, देशवासियों की सफलता को, उनकी इंस्पाइरिंग लाइफ़ जर्नी को, आपसे साझा करने का अवसर मिला है। इन दिनों सबसे ज़्यादा पत्र, सन्देश, जो मुझे मिले हैं, वो दो विषयों पर बहुत अधिक हैं। पहला विषय है **'चंद्रयान-3' की सफल लैंडिंग और दूसरा विषय है दिल्ली में G20 का सफल आयोजन। देश के हर हिस्से से, समाज के हर वर्ग से, हर उम्र के लोगों के मुझे अनगिनत पत्र मिले हैं। जब चंद्रयान-3 का लैंडर चंद्रमा पर उतरने वाला था, तब करोड़ों लोग अलग-अलग माध्यमों के ज़रिए एक साथ इस घटना के पल-पल के साक्षी बन रहे थे। ISRO के YouTube लाइव चैनल पर 80 लाख से ज़्यादा लोगों ने इस घटना को देखा। अपने आप में ही एक रिकॉर्ड है। इससे पता चलता है कि चंद्रयान-3 से करोड़ों भारतीयों का कितना गहरा लगाव है। चंद्रयान की इस सफलता पर देश में इन दिनों एक बहुत ही शानदार क्विज़ कम्पटीशन भी चल रहा है– प्रश्नस्पर्धा और उसे नाम दिया गया है– 'चंद्रयान-3 महाक्विज़', MyGov पोर्टल पर हो रहे इस कम्पटीशन में अब तक 15 लाख से ज़्यादा लोग हिस्सा ले चुके हैं।** MyGov की

शुरुआत के बाद यह किसी भी क्विज़ में सबसे बड़ा पार्टिसिपेशन है। मैं तो आपसे भी कहूँगा कि अगर आपने अब तक इसमें हिस्सा नहीं लिया है तो अब देर मत करिए, अभी इसमें छह दिन और बचे हैं। इस क्विज़ में ज़रूर हिस्सा लीजिए।

मेरे परिवारजनो, चंद्रयान-3 की सफलता के बाद G20 के शानदार आयोजन ने हर भारतीय की खुशी को दोगुना कर दिया। भारत मंडपम तो अपने आप में एक सेलेब्रिटी की तरह हो गया है। लोग उसके साथ सेल्फी खिंचा रहे हैं और गर्व से पोस्ट भी कर रहे हैं। भारत ने इस समिट में अफ्रीकन यूनियन को G20 में फुल मेम्बर बनाकर अपने नेतृत्व का लोहा मनवाया है। आपको ध्यान होगा, जब भारत बहुत समृद्ध था, उस ज़माने में, हमारे देश में और दुनिया में, सिल्क रूट की बहुत चर्चा होती थी। ये सिल्क रूट, व्यापार-कारोबार का बहुत बड़ा माध्यम था। **अब आधुनिक ज़माने में भारत ने एक और इकनोमिक कॉरिडोर, G20 में सुझाया है। ये है– इंडिया - मिडिल ईस्ट - यूरोप इकोनॉमिक कॉरिडोर। ये कॉरिडोर आने वाले सैकड़ों वर्षों तक विश्व व्यापार का आधार बनने जा रहा है और इतिहास इस बात को हमेशा याद रखेगा कि इस कॉरिडोर का सूत्रपात भारत की धरती पर हुआ था।**

साथियो, G-20 के दौरान जिस तरह भारत की युवा शक्ति इस आयोजन से जुड़ी, उसकी आज विशेष चर्चा आवश्यक है। साल-भर तक देश के अनेकों यूनिवर्सिटीज़ में G20 से जुड़े कार्यक्रम हुए। **अब इसी शृंखला में दिल्ली में एक और एक्साइटिंग प्रोग्राम होने जा रहा है– 'G20 यूनिवर्सिटी कनेक्ट प्रोग्राम'। इस प्रोग्राम के माध्यम से देश-भर के लाखों यूनिवर्सिटी स्टूडेंट्स एक-दूसरे से जुड़ेंगे। इसमें IITs, IIMs, NITs और मेडिकल कॉलेज जैसे कई प्रतिष्ठित संस्थान भी भाग लेंगे। मैं चाहूँगा कि अगर आप कॉलेज स्टूडेंट हैं, तो 26 सितम्बर को होने वाले इस कार्यक्रम को ज़रूर देखिएगा, इससे ज़रूर जुड़िएगा।** भारत के भविष्य में, युवाओं के भविष्य पर, इसमें बहुत सारी दिलचस्प बातें होने वाली हैं। मैं खुद भी इस कार्यक्रम में शामिल होऊँगा। मुझे भी अपने कॉलेज स्टूडेंट से संवाद का इंतज़ार है।

मेरे परिवारजनो, आज से दो दिन बाद, 27 सितम्बर को 'विश्व पर्यटन दिवस' है। पर्यटन को कुछ लोग सिर्फ़ सैर-सपाटे के तौर पर देखते हैं, लेकिन पर्यटन का एक बहुत बड़ा पहलू 'रोज़गार' से जुड़ा है। कहते हैं, सबसे कम इन्वेस्टमेंट में, सबसे ज़्यादा रोज़गार अगर कोई सेक्टर पैदा करता है, तो वो टूरिज़्म सेक्टर ही है। टूरिज़्म सेक्टर को बढ़ाने में, किसी भी देश के लिए गुडविल, उसके प्रति आकर्षण बहुत मैटर करता है। बीते कुछ वर्षों में भारत के प्रति आकर्षण बहुत बढ़ा है और G20 के सफल आयोजन के बाद दुनिया के लोगों का इंटरेस्ट भारत में और बढ़ गया है।

साथियो, G20 में एक लाख से ज़्यादा डेलिगेट्स भारत आए। वो यहाँ की विविधता, अलग-अलग परम्पराएँ, भाँति-भाँति का खान-पान और हमारी धरोहरों से परिचित हुए। यहाँ आने वाले डेलिगेट्स अपने साथ जो शानदार अनुभव लेकर गए हैं, उससे टूरिज़्म का और विस्तार होगा। आप लोगों को पता ही है कि भारत में एक से बढ़कर एक वर्ल्ड हेरिटेज साइट्स भी हैं और इनकी संख्या लगातार बढ़ती जा रही है। **कुछ ही दिन पहले शान्तिनिकेतन और कर्नाटक के पवित्र होयसला मंदिरों को वर्ल्ड हेरिटेज साइट्स घोषित किया गया है। मैं इस शानदार उपलब्धि के लिए समस्त देशवासियों को बधाई देता हूँ।** मुझे 2018 में शान्तिनिकेतन की यात्रा का सौभाग्य मिला था। शान्तिनिकेतन से गुरुदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर का जुड़ाव रहा है। गुरुदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर ने शान्तिनिकेतन का मोटो संस्कृत के एक प्राचीन श्लोक से लिया था। वह श्लोक है–

"यत्र विश्वम् भवत्येक नीडम्"

अर्थात, जहाँ एक छोटे से घोंसले में पूरा संसार समाहित हो सकता है।

कर्नाटक के जिन होयसला मंदिरों को यूनेस्को ने विश्व धरोहर सूची में शामिल किया है, उन्हें 13वीं शताब्दी के बेहतरीन आर्किटेक्चर के लिए जाना जाता है। इन मंदिरों को UNESCO से मान्यता मिलना, मंदिर निर्माण की भारतीय परम्परा का भी सम्मान है। भारत में अब वर्ल्ड हेरिटेज प्रॉपर्टीज़ की कुल संख्या 42 हो गई है। भारत का प्रयास है कि हमारे ज़्यादा-से-ज़्यादा ऐतिहासिक और सांस्कृतिक जगहों को वर्ल्ड हेरिटेज साइट्स की मान्यता मिले। मेरा आप सबसे आग्रह है कि जब भी आप कहीं घूमने जाने की योजना बनाएँ तो ये प्रयास करें कि भारत की विविधता के दर्शन करें। आप अलग-अलग

राज्यों की संस्कृति को समझें, हेरिटेज साइट्स को देखें। इससे आप अपने देश के गौरवशाली इतिहास से तो परिचित होंगे ही, स्थानीय लोगों की आय बढ़ाने का भी आप अहम माध्यम बनेंगे।

मेरे परिवारजनो, भारतीय संस्कृति और भारतीय संगीत अब ग्लोबल हो चुका है। दुनियाभर के लोगों का इनसे लगाव दिनों-दिन बढ़ता ही जा रहा है। एक प्यारी सी बिटिया द्वारा की गई एक प्रस्तुति। उसका एक छोटा सा ऑडियो आपको सुनाता हूँ.....

(स्कैन करें और सुनें)

इसे सुनकर आप भी हैरान हो गए न! कितनी मधुर आवाज़ है और हर शब्द में जो भाव झलकते हैं, ईश्वर के प्रति इनका लगाव हम अनुभव कर सकते हैं। अगर मैं ये बताऊँ कि ये सुरीली आवाज़ जर्मनी की एक बेटी की है, तो शायद आप और अधिक हैरान होंगे। **इस बिटिया का नाम कैसमी है। 21 साल की कैसमी इन दिनों इंस्टाग्राम पर खूब छाई हुई है। जर्मनी की रहने वाली कैसमी कभी भारत नहीं आई है, लेकिन वो भारतीय संगीत की दीवानी है, जिसने कभी भारत को देखा तक नहीं, उसकी भारतीय संगीत में ये रुचि बहुत ही इंस्पाइरिंग है। कैसमी जन्म से ही देख नहीं पाती है, लेकिन ये मुश्किल चुनौती उन्हें असाधारण उपलब्धियों से रोक नहीं पाई। म्यूज़िक और क्रिएटिविटी को लेकर उनका पैशन कुछ ऐसा था कि बचपन से ही उन्होंने गाना शुरू कर दिया। अफ्रीकन ड्रमिंग की शुरुआत तो उन्होंने महज 3 साल की उम्र में ही कर दी थी। भारतीय संगीत से उनका परिचय 5-6 साल पहले ही हुआ। भारत के संगीत ने उनको इतना मोह लिया, इतना मोह लिया कि वो इसमें पूरी तरह से रम गईं। उन्होंने तबला बजाना भी सीखा है। सबसे इंस्पाइरिंग बात तो यह है कि वे कई सारी भारतीय भाषाओं में गाने में महारत हासिल कर चुकी हैं।** संस्कृत, हिन्दी, मलयालम, तमिल, कन्नड़ या फिर असमिया, बंगाली, मराठी, उर्दू, उन्होंने इन सब में अपने सुर साधे हैं। आप कल्पना कर सकते हैं, किसी को दूसरी अनजान भाषा की दो-तीन लाइनें बोलनी पड़ जाएँ तो कितनी मुश्किल आती है, लेकिन कैसमी के लिए जैसे बाएँ हाथ का खेल है। आप सभी के लिए मैं यहाँ कन्नड़ में गाए उनके एक गीत को शेयर कर रहा हूँ।

(स्कैन करें और सुनें)

भारतीय संस्कृति और संगीत को लेकर जर्मनी की कैसमी के इस जुनून की मैं हृदय से सराहना करता हूँ। उनका यह प्रयास हर भारतीय को अभिभूत करने वाला है।

मेरे परिवारजनो, हमारे देश में शिक्षा को हमेशा एक सेवा के रूप में देखा जाता है। मुझे उत्तराखंड के कुछ ऐसे युवाओं के बारे में पता चला है, जो इसी भावना के साथ बच्चों की शिक्षा के लिए काम कर रहे हैं। नैनीताल ज़िले में कुछ युवाओं ने बच्चों के लिए अनोखी घोड़ा लाइब्रेरी की शुरुआत की है। इस लाइब्रेरी की सबसे बड़ी विशेषता यही है कि दुर्गम से दुर्गम इलाकों में भी इसके ज़रिए बच्चों तक पुस्तकें पहुँच रही हैं और इतना ही नहीं, ये सेवा बिल्कुल नि:शुल्क है। अब तक इसके माध्यम से नैनीताल के 12 गाँवों को कवर किया गया है। बच्चों की शिक्षा से जुड़े इस नेक काम में मदद करने के लिए स्थानीय लोग भी खूब आगे आ रहे हैं। इस घोड़ा लाइब्रेरी के जरिए यह प्रयास किया जा रहा है कि दूरदराज के गाँवों में रहने वाले बच्चों को स्कूल की किताबों के अलावा 'कविताएँ', 'कहानियाँ' और 'नैतिक शिक्षा' की किताबें भी पढ़ने का पूरा मौका मिले। ये अनोखी लाइब्रेरी बच्चों को भी खूब भा रही है।

साथियो, मुझे हैदराबाद में लाइब्रेरी से जुड़े एक ऐसे ही अनूठे प्रयास के बारे में पता चला है। यहाँ सातवीं क्लास में पढ़ने वाली बिटिया आकर्षणा सतीश ने तो कमाल कर दिया है। आपको यह जानकार आश्चर्य हो सकता है कि महज़ 11 साल की उम्र में ये बच्चों के लिए एक-दो नहीं, बल्कि सात-सात लाइब्रेरी चला रही है। आकर्षणा को दो साल पहले इसकी प्रेरणा तब मिली, जब वो अपने माता-पिता के साथ एक कैंसर अस्पताल गई थी। उसके पिता ज़रूरतमंदों की मदद के सिलसिले में वहाँ गए थे। बच्चों ने वहाँ उनसे 'कलरिंग बुक्स' की माँग की और यही बात, इस प्यारी-सी गुड़िया को इतनी छू गई कि उसने अलग-अलग तरह की किताबें जुटाने की ठान ली। उसने अपने आस-पड़ोस के घरों, रिश्तेदारों और साथियों से किताबें इकट्ठा करना शुरू कर दिया और आपको यह जानकार खुशी होगी कि पहली लाइब्रेरी उसी कैंसर अस्पताल में बच्चों के लिए खोली गई। ज़रूरतमंद बच्चों के लिए

अलग-अलग जगहों पर इस बिटिया ने अब तक जो सात लाइब्रेरी खोली हैं, उनमें अब करीब 6 हज़ार किताबें उपलब्ध हैं। छोटी-सी आकर्षणा जिस **तरह बच्चों का भविष्य सँवारने का बड़ा काम कर रही है, वो हर किसी को प्रेरित करने वाला है।**

साथियो, ये बात सही है कि आज का दौर डिजिटल टेक्नोलॉजी और ई-बुक का है, लेकिन फिर भी किताबें, हमारे जीवन में हमेशा एक अच्छे दोस्त की भूमिका निभाती हैं। इसलिए हमें बच्चों को किताबें पढ़ने के लिए प्रेरित करना चाहिए।

मेरे परिवारजनो, हमारे शास्त्रों में कहा गया है –

"जीवेषु करुणा चापि, मैत्री तेषु विधीयताम्।"

अर्थात् जीवों पर करुणा कीजिए और उन्हें अपना मित्र बनाइए। हमारे तो ज़्यादातर देवी-देवताओं की सवारी ही पशु-पक्षी हैं। बहुत से लोग मंदिर जाते हैं, भगवान के दर्शन करते हैं, लेकिन जो जीव-जंतु उनकी सवारी होते हैं, उस तरफ़ उतना ध्यान नहीं देते। ये जीव-जंतु हमारी आस्था के केंद्र में तो रहने ही चाहिए, हमें इनका हर सम्भव संरक्षण भी करना चाहिए। **बीते कुछ वर्षों में देश में शेर, बाघ, तेंदुआ और हाथियों की संख्या में उत्साहवर्धक बढ़ोतरी देखी गई है। कई और प्रयास भी निरंतर जारी हैं, ताकि इस धरती पर रह रहे दूसरे जीव-जंतुओं को बचाया जा सके। ऐसा ही एक अनोखा प्रयास राजस्थान के पुष्कर में भी किया जा रहा है। यहाँ सुखदेव भट्टजी और उनकी टीम मिलकर वन्य जीवों को बचाने में जुटे हैं और जानते हैं; उनकी टीम का नाम क्या है? उनकी टीम का नाम है– कोबरा। ये ख़तरनाक नाम इसलिए है, क्योंकि उनकी टीम इस क्षेत्र में खतरनाक साँपों का रेस्क्यू करने का काम भी करती है। इस टीम में बड़ी संख्या में लोग जुड़े हैं, जो सिर्फ एक कॉल पर मौके पर पहुँचते हैं और अपने मिशन में जुट जाते हैं। सुखदेवजी की इस टीम ने अब तक 30 हज़ार से ज़्यादा जहरीले साँपों का जीवन बचाया है।** इस प्रयास से जहाँ लोगों का खतरा दूर हुआ है, वहीं प्रकृति का संरक्षण भी हो रहा है। ये टीम अन्य बीमार जानवरों की सेवा के काम से भी जुड़ी हुई है।

साथियो, तमिलनाडु के चेन्नई में ऑटो ड्राइवर एम. राजेन्द्र प्रसादजी भी एक अनोखा काम कर रहे हैं। वो पिछले 25-30 साल से कबूतरों की सेवा के काम में जुटे हैं। खुद उनके घर में 200 से ज़्यादा कबूतर हैं, वहीं पक्षियों के भोजन, पानी, स्वास्थ्य जैसी हर ज़रूरत का पूरा ध्यान रखते हैं। इस पर उनका काफ़ी पैसा भी खर्च होता है, लेकिन वो अपने काम में डटे हुए हैं। साथियो, लोगों को नेक नीयत से ऐसा काम करते देखकर वाकई बहुत सुकून मिलता है, काफ़ी खुशी होती है। अगर आपको भी ऐसे ही कुछ अनूठे प्रयासों के बारे में जानकारी मिले तो उन्हें ज़रूर शेयर कीजिए।

मेरे प्यारे परिवारजनो, आज़ादी का ये अमृतकाल, देश के लिए हर नागरिक का कर्तव्यकाल भी है। अपने कर्तव्य निभाते हुए ही हम अपने लक्ष्यों को पा सकते हैं, अपनी मंज़िल तक पहुँच सकते हैं। कर्तव्य की भावना, हम

आने वाली पीढ़ियों के लिए हमारा उपहार
वन्यजीव संरक्षण

सभी को एक सूत्र में पिरोती है। यू.पी. के सम्भल में देश ने कर्तव्य भावना की एक ऐसी मिसाल देखी है, जिसे मैं आपसे भी शेयर करना चाहता हूँ। आप सोचिए, 70 से ज़्यादा गाँव हों, हज़ारों की आबादी हो और सभी लोग मिलकर एक लक्ष्य, एक ध्येय की प्राप्ति के लिए साथ आ जाएँ, जुट जाएँ, ऐसा कम ही होता है, लेकिन सम्भल के लोगों ने ये करके दिखाया। इन लोगों ने मिलकर जन-भागीदारी और सामूहिकता की बहुत ही शानदार मिसाल कायम की है। दरअसल, इस क्षेत्र में दशकों पहले 'सोत' नाम की एक नदी हुआ करती थी। अमरोहा से शुरू होकर सम्भल होते हुए बदायूँ तक बहने वाली ये नदी एक समय इस क्षेत्र में जीवनदायिनी के रूप में जानी जाती थी। इस नदी में अनवरत जल प्रवाहित होता था, जो यहाँ के किसानों के लिए खेती का मुख्य आधार था। समय के साथ नदी का प्रवाह कम हुआ, नदी जिन रास्तों से बहती थी, वहाँ अतिक्रमण हो गया और ये नदी विलुप्त हो गई। नदी को माँ मानने वाले हमारे देश में सम्भल के लोगों ने इस सोत नदी को भी पुनर्जीवित करने का संकल्प ले लिया। **पिछले साल दिसम्बर में सोत नदी के कायाकल्प का काम 70 से ज़्यादा ग्राम पंचायतों ने मिलकर शुरू किया। ग्राम पंचायतों के लोगों ने सरकारी विभागों को भी अपने साथ लिया। आपको ये जानकर ख़ुशी होगी कि साल के पहले 6 महीने में ही ये लोग**

नदी के 100 किलोमीटर से ज़्यादा रास्ते का पुनरुद्धार कर चुके थे। जब बारिश का मौसम शुरू हुआ तो यहाँ के लोगों की मेहनत रंग लाई और सोत नदी पानी से लबालब भर गई। यहाँ के किसानों के लिए यह ख़ुशी का एक बड़ा मौका बनकर आया है। लोगों ने नदी के किनारे बाँस के 10 हज़ार से भी अधिक पौधे भी लगाए हैं, ताकि इसके किनारे पूरी तरह सुरक्षित रहें। नदी के पानी में तीस हज़ार से अधिक गम्बूसिया मछलियों को भी छोड़ा गया है ताकि मच्छर न पनपें। साथियो, सोत नदी का उदाहरण हमें बताता है कि अगर हम ठान लें तो बड़ी से बड़ी चुनौतियों को पार कर एक बड़ा बदलाव ला सकते हैं। आप भी कर्तव्य पथ पर चलते हुए अपने आस-पास ऐसे बहुत से बदलावों का माध्यम बन सकते हैं।

मेरे परिवारजनो, जब इरादे अटल हों और कुछ सीखने की लगन हो, तो कोई काम मुश्किल नहीं रह जाता है। **पश्चिम बंगाल की श्रीमती शकुंतला सरदार ने इस बात को बिल्कुल सही साबित करके दिखाया है। आज वो कई दूसरी महिलाओं के लिए प्रेरणा बन गई हैं। शकुंतलाजी जंगल महल के शातनाला गाँव की रहने वाली हैं। लम्बे समय तक उनका परिवार हर रोज मज़दूरी करके अपना पेट पालता था। उनके परिवार के लिए गुज़र-बसर भी मुश्किल थी। फिर उन्होंने एक नए रास्ते पर चलने का फैसला किया और सफलता हासिल कर सबको हैरान कर दिया। आप ये ज़रूर जानना चाहेंगे कि उन्होंने ये कमाल कैसे किया! इसका जवाब है– एक सिलाई मशीन। एक सिलाई मशीन के ज़रिए उन्होंने 'साल' की पत्तियों पर खूबसूरत डिज़ाइन बनाना शुरू किया। उनके इस हुनर ने पूरे परिवार का जीवन बदल दिया।** उनके बनाए इस अद्भुत क्राफ्ट की माँग लगातार बढ़ती जा रही है। शकुंतलाजी के इस हुनर ने न सिर्फ़ उनका, बल्कि 'साल' की पत्तियों को जमा करने वाले कई लोगों का जीवन भी बदल दिया है। अब वो कई महिलाओं को ट्रेनिंग देने

का भी काम कर रही हैं। आप कल्पना कर सकते हैं, एक परिवार, जो कभी मज़दूरी पर निर्भर था, अब ख़ुद दूसरों को रोज़गार के लिए प्रेरित कर रहा है। उन्होंने रोज़ की मज़दूरी पर निर्भर रहने वाले अपने परिवार को अपने पैरों पर खड़ा कर दिया है। इससे उनके परिवार को अन्य चीज़ों पर भी फ़ोकस करने का अवसर मिला है। एक बात और हुई है, जैसे ही शकुंतलाजी की स्थिति कुछ ठीक हुई, उन्होंने बचत करना भी शुरू कर दिया है। अब वो जीवन बीमा योजनाओं में निवेश करने लगी हैं, ताकि उनके बच्चों का भविष्य भी उज्ज्वल हो। शकुंतलाजी के जज़्बे के लिए उनकी जितनी सराहना की जाए, वो कम है। भारत के लोग ऐसी ही प्रतिभा से भरे होते हैं– आप उन्हें अवसर दीजिए और देखिए वे क्या-क्या कमाल कर दिखाते हैं।

स्वच्छता ही सेवा

मेरे परिवारजनो, दिल्ली में G20 समिट के दौरान उस दृश्य को भला कौन भूल सकता है, जब कई वर्ल्ड लीडर्स बापू को श्रद्धासुमन अर्पित करने एक साथ राजघाट पहुँचे। यह इस बात का एक बड़ा प्रमाण है कि दुनिया-भर में बापू के विचार आज भी कितने प्रासंगिक हैं। मुझे इस बात की भी ख़ुशी है कि गाँधी जयंती को लेकर पूरे देश में स्वच्छता से सम्बन्धित बहुत सारे कार्यक्रमों का प्लान किया गया है। केंद्र सरकार के सभी कार्यालयों में 'स्वच्छता ही सेवा' अभियान काफ़ी ज़ोर-शोर से जारी है। इंडियन स्वच्छता लीग में भी काफ़ी अच्छी भागीदारी देखी जा रही है। आज मैं 'मन की बात' के माध्यम से सभी देशवासियों से एक आग्रह भी करना चाहता हूँ– 1 अक्तूबर यानी रविवार को सुबह 10 बजे स्वच्छता पर एक बड़ा आयोजन होने जा रहा है। आप भी अपना वक़्त निकालकर स्वच्छता से जुड़े इस अभियान में अपना हाथ बटाएँ। आप अपनी गली, आस-पड़ोस, पार्क, नदी, सरोवर या फिर किसी दूसरे सार्वजनिक स्थल पर इस स्वच्छता अभियान से जुड़ सकते हैं और जहाँ-जहाँ अमृत सरोवर बने हैं, वहाँ तो स्वच्छता अवश्य करनी है। स्वच्छता की ये कार्यांजलि ही गाँधीजी को सच्ची श्रद्धांजलि होगी। मैं आपको फिर से याद दिलाना चाहूँगा कि इस गाँधी जयंती के अवसर पर खादी का कोई ना कोई प्रोडक्ट ज़रूर ख़रीदें।

मेरे परिवारजनो, हमारे देश में त्योहारों का सीज़न भी शुरू हो चुका है। आप सभी के घर में भी कुछ नया ख़रीदने की योजना बन रही होगी। कोई इस इंतजार में होगा कि नवरात्र के समय वो अपना शुभ काम शुरू करेगा। उमंग, उत्साह के इस वातावरण में आप वोकल फॉर लोकल का मंत्र भी ज़रूर याद रखें। जहाँ तक सम्भव हो, आप भारत में बने सामानों की ख़रीदारी करें, भारतीय प्रोडक्ट का उपयोग करें और 'मेड इन इंडिया' सामान का ही उपहार दें। आपकी छोटी सी ख़ुशी, किसी दूसरे के परिवार की बहुत बड़ी ख़ुशी का कारण बनेगी। आप, जो भारतीय सामान ख़रीदेंगे, उसका सीधा फ़ायदा हमारे श्रमिकों, कामगारों, शिल्पकारों और अन्य विश्वकर्मा भाई-बहनों को मिलेगा। आजकल तो बहुत सारे स्टार्टअप्स भी स्थानीय प्रोडक्ट्स को बढ़ावा दे रहे हैं। आप स्थानीय चीज़ें ख़रीदेंगे तो स्टार्टअप्स के इन युवाओं को भी फ़ायदा होगा।

मेरे प्यारे परिवारजनो, 'मन की बात' में बस आज इतना ही। अगली बार जब आपसे 'मन की बात' में मिलूँगा तो नवरात्रि और दशहरा बीत चुके होंगे। त्योहारों के इस मौसम में आप भी पूरे उत्साह से हर पर्व मनाएँ, आपके परिवार में ख़ुशियाँ रहें, मेरी यही कामना है। इन पर्वों की आपको बहुत सारी शुभकामनाएँ। आपसे फिर मुलाकात होगी और भी नए विषयों के साथ, देशवासियों की नई सफलताओं के साथ। आप, अपने सन्देश मुझे ज़रूर भेजते रहिए, अपने अनुभव शेयर करना ना भूलें। मैं प्रतीक्षा करूँगा।

बहुत-बहुत धन्यवाद।

नमस्कार।

'मन की बात' सुनने के लिए QR कोड स्कैन करें।

मन की बात

प्रधानमंत्री द्वारा विशेष उल्लेख

G20 नई दिल्ली लीडर्स डिक्लेरेशन

वैश्विक सहयोग का शिखर

“चंद्रयान-3 की सफलता के बाद G20 के शानदार आयोजन ने हर भारतीय की खुशी को दोगुना कर दिया। भारत ने इस समिट में अफ्रीकी संघ को G20 में फुल मेम्बर बनाकर अपने नेतृत्व का लोहा मनवाया है। इतिहास इस बात को हमेशा याद रखेगा कि इंडिया - मिडिल ईस्ट - यूरोप इकोनॉमिक कॉरिडोर का सूत्रपात भारत की धरती पर हुआ था।”

-प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी
(‘मन की बात’ सम्बोधन में)

“इंडिया - मिडिल ईस्ट - यूरोप इकोनॉमिक कॉरिडोर (IMEC) प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की परिकल्पना है। यह प्रमुख परियोजना G20 शिखर सम्मेलन के सबसे महत्त्वपूर्ण और ठोस परिणामों में से एक है।”

-संजय सुधीर
संयुक्त अरब अमीरात में राजदूत

‘एक पृथ्वी, एक परिवार, एक भविष्य’ के मार्गदर्शक सिद्धान्त पर केन्द्रित G20 नई दिल्ली लीडर्स डिक्लेरेशन का 9 सितम्बर, 2023 को सर्वसम्मति से पारित होना G20 के इतिहास में एक महत्त्वपूर्ण मोड़ है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के दूरदर्शी नेतृत्त्व और समावेशी दृष्टि ने नेताओं के शिखर सम्मेलन में G20 देशों को प्रगति के लिए सकल घरेलू उत्पाद (GDP) केंद्रित दृष्टिकोण की बजाय मानव-केंद्रित दृष्टिकोण पर सहमत होने के लिए एकजुट किया।

भारत की G20 अध्यक्षता के तहत अफ्रीकी संघ को स्थायी सदस्य के रूप में शामिल करना एक प्रमुख और ऐतिहासिक घटना रही, जिससे समावेशिता और ग्लोबल साउथ की आवाज़ बुलन्द करने के भारत के अभियान को गति मिली है। अधिक न्यायोचित और प्रतिनिधित्वपूर्ण अन्तरराष्ट्रीय व्यवस्था की दिशा में उठाए गए इस क़दम से, वैश्विक व्यवस्था में भारत को एक प्रमुख खिलाड़ी के रूप में मज़बूती मिली है। सिंगापुर, बांग्लादेश, इटली, अमरीका, ब्राज़ील, अर्जेंटीना, मॉरीशस और संयुक्त अरब अमीरात के नेताओं के साथ भारत ने वैश्विक जैव ईंधन गठबन्धन (ग्लोबल बायोफ्यूल अलायंस) शुरू करने की भी घोषणा की, जो जैव ईंधन की प्रगति और व्यापक रूप से अपनाए जाने की दिशा में एक उत्प्रेरक मंच के रूप में काम करते हुए वैश्विक सहयोग को बढ़ावा देगा।

वैश्विक महामारी, आर्थिक असमानताओं और जलवायु परिवर्तन की पृष्ठभूमि में G20 नई दिल्ली लीडर्स डिक्लेरेशन, वैश्विक एकता और आशा की किरण के रूप में उभरा, जो वैश्विक मुद्दों से निपटने के लिए दुनिया के अग्रणी देशों की प्रतिबद्धता को रेखांकित करता है। ध्यान देने योग्य एक महत्त्वपूर्ण बात यह है कि डिक्लेरेशन के सभी 83 अनुच्छेदों पर नेता शत-प्रतिशत एकमत थे और इन्हें सर्वसम्मति से पारित किया गया। इस डिक्लेरेशन में न तो कोई फ़ुटनोट था और न ही चेयर्स समरी। अब तक की सबसे महत्त्वाकांक्षी G20 अध्यक्षता के लीडर्स डिक्लेरेशन में 112 परिणाम और संलग्न दस्तावेज़ शामिल थे, जो पिछली अध्यक्षताओं के मूल कार्यों के तीन गुना से भी अधिक हैं।

इसके अलावा भारत ने G20 के निष्कर्षों पर विशिष्ट छाप छोड़ते हुए उन्हें देश के प्रतिष्ठित स्थलों और स्थानों के नाम पर रखा है, जैसे ‘खाद्य सुरक्षा और पोषण पर डैक्कन उच्च-स्तरीय सिद्धान्त’, ‘ब्लू एंड ओशन इकोनॉमी के लिए चेन्नई उच्च-स्तरीय सिद्धान्त’, ‘पर्यटन के लिए गोवा रोडमैप’, ‘भूमि बहाली के लिए गाँधीनगर कार्यान्वयन रोडमैप’, काशी संस्कृति मार्ग और एमएसएमई

की सूचना को विस्तार देने के उद्देश्य से 'जयपुर कॉल फॉर एक्शन'।

G20 नई दिल्ली लीडर्स डिक्लेरेशन आज की दुनिया में 'पृथ्वी, लोग, शान्ति और समृद्धि' के लिए एक शक्तिशाली आह्वान है। पहले ही अध्याय में वैश्विक आर्थिक स्थिति के सन्दर्भ में 'मज़बूत, सस्टेनेबल, संतुलित और समावेशी विकास' का उल्लेख है, जो वित्तीय समावेशन को आगे बढ़ाने और भ्रष्टाचार का मुक़ाबला करने पर केंद्रित है।

इसे हासिल करने का एक अहम उपाय, सतत विकास लक्ष्यों (एसडीजी) की प्रगति में तेज़ी लाना है। घोषणा पत्र ने G20, 2023 कार्य योजना के प्रभावी और समय पर कार्यान्वयन के लिए सामूहिक कार्रवाई का पूरा नक्शा तैयार किया है। दस्तावेज़ में माना गया है कि संस्कृति, एसडीजी के कायाकल्प में सहायक हो सकती है। गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करना, भूख और कुपोषण को खत्म करने के साथ-साथ वैश्विक स्वास्थ्य को मज़बूत करना और वन हेल्थ दृष्टिकोण को लागू करना भी फ़ोकस क्षेत्र हैं। महत्त्वपूर्ण खनिजों, सेमीकंडक्टर्स, और सम्बन्धित प्रौद्योगिकियों के लिए भरोसेमंद, विविध, दायित्वपूर्ण और सस्टेनेबल आपूर्ति श्रृंखला स्थापित करने की आवश्यकता पर भी प्रकाश डाला गया है।

G20 घोषणापत्र में प्रौद्योगिक प्रगति, कृत्रिम मेधा के दायित्वपूर्ण उपयोग और जवाबदेही तथा समावेशिता को प्राथमिकता देने वाले डिजिटल सार्वजनिक बुनियादी ढाँचे (डीपीआई) के विकास पर आधारित एक दूरदर्शी दृष्टिकोण स्पष्ट किया गया है। G20 देशों ने डीपीआई के एक आभासी भंडार– ग्लोबल डिजिटल पब्लिक इन्फ्रास्ट्रक्चर रिपॉज़िटरी (GDPIR) के निर्माण और रखरखाव की भारत की योजना का स्वागत किया है।

21वीं सदी की ज़रूरतों के अनुरूप, वैश्विक रूप से निष्पक्ष, टिकाऊ और आधुनिक अन्तरराष्ट्रीय कर-प्रणाली, लैंगिक समानता के साथ-साथ लिंग सम्बन्धी डिजिटल विभाजन, महिलाओं के नेतृत्व में विकास और 'आज का युग युद्ध का नहीं' के कथन के साथ आतंकवाद की कड़ी निन्दा करने वाली G20 घोषणा, विश्व को मौजूदा चुनौतियों से बाहर निकलने और इसे अधिक सुरक्षित, मज़बूत, लचीला, समावेशी और पृथ्वी तथा इसके लोगों के स्वस्थ भविष्य के लिए समूह का दृढ़ संकल्प प्रदर्शित करती है।

नई दिल्ली में G20 लीडर्स डिक्लेरेशन केवल एक दस्तावेज़ नहीं है, बल्कि एक अधिक समावेशी, सस्टेनेबल और न्यायोचित विश्व का दृष्टिकोण है। यह मिलकर काम करने के लिए राष्ट्रों की सामूहिक इच्छा का प्रतिनिधित्व करता है और अंतरराष्ट्रीय सहयोग तथा संवाद की शक्ति का साक्षी है। आने वाले वर्षों में भारत की G20 अध्यक्षता की विरासत, न केवल शिखर सम्मेलन घोषणा के निष्कर्षों के लिए, अपितु एक समृद्ध, समानतापूर्ण और सद्भाव सम्पन्न विश्व निर्माण के सामूहिक प्रयासों के रूप में याद रखी जाएगी।

भारत मंडपम

'थिंक बिग, ड्रीम बिग, एक्ट बिग' के सिद्धांत के साथ विकसित, नई दिल्ली के प्रगति मैदान में अंतरराष्ट्रीय प्रदर्शनी-सह-सम्मेलन केंद्र, **भारत मंडपम**, G20 नेताओं के शिखर सम्मेलन का आधिकारिक स्थल था। 123 एकड़ के विशाल क्षेत्र को कवर करते हुए इसे भारत के सबसे बड़े MICE (मीटिंग्स, इन्सेन्टिव्स, कॉन्फरेन्सेस और एक्ज़ीबिशंस) गंतव्य के रूप में विकसित किया गया है।

भारत मंडपम का वास्तुशिल्प डिज़ाइन भारत की समृद्ध परम्पराओं को प्रदर्शित करता है। इमारत की सुन्दर आकृतियाँ शंख के भव्य रूप को दर्शाती हैं। इसका अंडाकार आकार दिल्ली से गुज़रती यमुना नदी के घुमावदार प्रवाह को खूबसूरती से दर्शाता है। नटराज की 27 फीट ऊँची अष्टधातु की मूर्ति, जो चोलों द्वारा अपनाई जाने वाली पारम्परिक 'लॉस्ट-वैक्स' कास्टिंग विधि से बनाई गई है, मंडपम के प्रवेश द्वार को सुशोभित करती है।

मंडपम की दीवारें और अग्रभाग भारत की परम्पराओं के कई तत्वों को दर्शाते हैं :

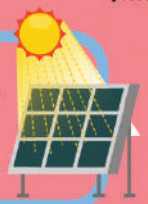

'सूर्य शक्ति' सौर ऊर्जा के दोहन में भारत के प्रयासों पर प्रकाश डालती है

'पंच महाभूत', सार्वभौमिक नींव के निर्माण खंडों (आकाश, वायु, अग्नि, जल और पृथ्वी) को दर्शाता है

'ज़ीरो टू इसरो' अंतरिक्ष में भारत की उपलब्धियों का जश्न है

देश के विभिन्न क्षेत्रों की **पेंटिंग्स** और **जनजातीय कला रूप**

भारत मंडपम भगवान बसवेश्वर की 'अनुभव मंडप' की अवधारणा से प्रेरित है, जो सार्वजनिक समारोहों के लिए एक मंच के रूप में कार्य करता था। इस विरासत को अपनाते हुए भारत मंडपम एक समकालीन और विकसित समाज बनने की भारत की आकांक्षा के अनुरूप जनता के लिए व्यापक सुविधाएँ प्रदान करता है।

इसमें मौजूद हैं :

एक **अत्याधुनिक प्रदर्शनी** हॉल

एक **विशाल एम्फीथिएटर,** जिसमें 3 हज़ार लोगों के बैठने की क्षमता है

एक **विश्व स्तरीय सम्मेलन केंद्र**

एक **बहुमुखी बहुउद्देश्यीय हॉल** और एक **प्लेनरी हॉल**, जिसमें 7 हज़ार लोगों की संयुक्त क्षमता है

अंतरराष्ट्रीय मीडिया केंद्र

IMC को 2,000 से अधिक मीडिया प्रतिनिधियों की मेज़बानी करने की क्षमता के साथ भारत मंडपम के निकट विकसित किया गया है। हाई-स्पीड इंटरनेट कनेक्टिविटी और प्रिंटर के साथ वर्क स्टेशंस, एक आंतरिक प्रसारण केंद्र, विशेष प्रकाशन, मीडिया ब्रीफिंग/साक्षात्कार कक्ष, प्रसारण बूथ, रिपोर्टिंग के लिए लाइव स्टैंड-अप पोज़िशंस, मीडिया लाउंज, हेल्प डेस्क, मेडिकल रूम, खान-पान जैसी सुविधाएँ मीडिया कर्मियों के लिए उपलब्ध कराई गईं।

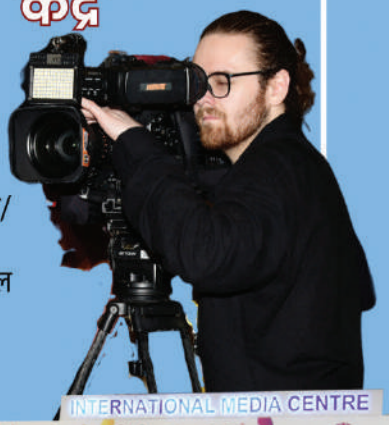

संस्कृति और नवाचार का प्रदर्शन

G20 शिखर सम्मेलन स्थल के रूप में अपनी केंद्रीय भूमिका निभाने के साथ-साथ, 'भारत मंडपम' भारत की संस्कृति और देश में हो रहे नवाचार को प्रदर्शित करने के लिए एक जीवंत मंच बन गया। भारत मंडपम में G20 नेताओं के शिखर सम्मेलन के दौरान विभिन्न प्रदर्शनियाँ और एक्सपीरियंस ज़ोन स्थापित किए गए थे।

संस्कृति गलियारा - G20 डिजिटल संग्रहालय

G20 लेगसी प्रोजेक्ट के रूप में परिकल्पित, संस्कृति गलियारा अपनी तरह की पहली सहयोगी परियोजना थी, जिसमें G20 सदस्यों और 9 आमंत्रित देशों की मूर्त, अमूर्त और प्राकृतिक विरासत को प्रदर्शित करने वाली प्रतिष्ठित और उल्लेखनीय सांस्कृतिक वस्तुएँ थीं, जिससे एक 'म्यूज़ियम-इन-मेकिंग' निर्मित किया गया। प्रदर्शनी में प्राचीन काल की लोकतांत्रिक प्रथाओं से सम्बन्धित वस्तुओं को भी प्रस्तुत किया गया।

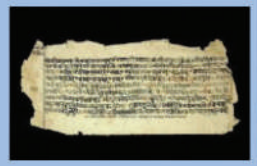

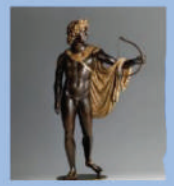

डिजिटल इंडिया एक्सपीरियंस ज़ोन

G20 प्रतिनिधियों को भारत द्वारा कार्यान्वित प्रौद्योगिकी की शक्ति का प्रत्यक्ष अनुभव प्रदान करने के लिए इस ज़ोन ने डिजिटल इंडिया की महत्त्वपूर्ण पहलों को अंतर्दृष्टि प्रदान की। आधार, डिजिलॉकर, UPI, ई-संजीवनी, दीक्षा, भाषिनी, ONDC, MyGov, CoWIN, UMANG, जन-धन, e-NAM, GSTN, FastTag और Ask GITA जैसी पहलों का प्रदर्शन किया गया।

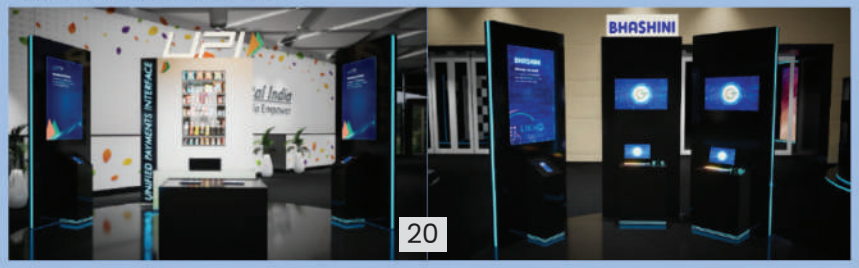

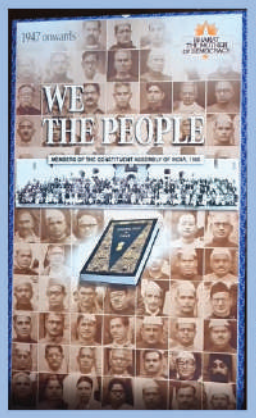

भारत : लोकतंत्र की जननी

इस क्यूरेटेड अनुभव में हमारे देश की लोकतांत्रिक परम्पराओं को प्रदर्शित किया गया। 26 इंटरैक्टिव पैनलों के माध्यम से भारत में लोकतंत्र के इतिहास को दर्शाया गया, जहाँ आगंतुक 16 विभिन्न भाषाओं में सामग्री पढ़ और सुन सकते थे।

शिल्प बाज़ार

वन डिस्ट्रिक्ट, वन प्रोडक्ट और GI-टैग वाली वस्तुओं पर विशेष फ़ोकस के साथ भारत के विभिन्न हिस्सों से हस्तशिल्प उत्पादों को प्रदर्शित करने के लिए एक शिल्प बाज़ार स्थापित किया गया था, जहाँ दक्ष कारीगरों द्वारा विशेष लाइव प्रदर्शन किए गए।

RBI का इनोवेशन पवेलियन

भारतीय रिज़र्व बैंक ने अत्याधुनिक और क्रान्तिकारी वित्तीय तकनीकों का प्रदर्शन किया, जिसमें सेंट्रल बैंक डिजिटल करेंसी; डिजिटल पेपरलेस तरीके से ऋण प्रदान करने के लिए प्रौद्योगिकी का उपयोग करते हुए फ्रिक्शनलेस क्रेडिट के लिए एक सार्वजनिक तकनीकी मंच और यूपीआई वन वर्ल्ड, रुपे ऑन द गो और भारत बिल पेमेंट्स के माध्यम से क्रॉस बॉर्डर बिल भुगतान जैसे उत्पाद शामिल थे।

G20 में अफ़्रीकी संघ का समावेश

एक ऐतिहासिक मील का पत्थर

'एक परिवार' की भावना को ध्यान में रखते हुए भारत एक ऐतिहासिक कदम में, अफ़्रीकी संघ (AU) को G20 में स्थायी सदस्य के रूप में शामिल करने में सफल हुआ। भारत की G20 अध्यक्षता की उपलब्धि होने के साथ-साथ, यह कदम ग्लोबल साउथ के विकासात्मक एजेंडे और इसके विश्व व्यवस्था में अधिकतम प्रतिनिधित्व के प्रति भारत की प्रतिबद्धता को दर्शाता है।

नई दिल्ली लीडर्स समिट में सभी दलों ने सर्वसम्मति से इस फैसले को स्वीकार किया और प्रमुख वैश्विक मुद्दों पर अफ़्रीकी महाद्वीप को एक महत्त्वपूर्ण आवाज़ देने के लिए दुनिया भर में इसका स्वागत किया गया। 'आमंत्रित अंतरराष्ट्रीय संगठन' AU को अब यूरोपीय संघ के समान दर्जा प्राप्त है, जो अब G20 में 19 देशों के साथ शामिल है। AU के ब्लॉक में शामिल होने से पहले दक्षिण अफ़्रीका एकमात्र ऐसा अफ़्रीकी देश था, जिसकी G20 सदस्यता थी।

AU के बारे में

- अफ़्रीकी एकता संगठन के उत्तराधिकारी के रूप में 2002 में आधिकारिक तौर पर लॉन्च किया गया
- इसमें 55 अफ़्रीकी राष्ट्र शामिल हैं, जो इस महाद्वीप को एकजुट करते हैं
- इसका मुख्यालय अदीस अबाबा, इथियोपिया में है
- यह दुनिया के सबसे बड़े मुक्त व्यापार क्षेत्र का प्रतिनिधित्व करता है

इंडिया - मिडिल ईस्ट - यूरोप

इकोनॉमिक कॉरिडोर

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने 9 सितम्बर, 2023 को नई दिल्ली में G20 नेताओं के शिखर सम्मेलन के मौके पर इंडिया - मिडिल ईस्ट - यूरोप इकोनॉमिक कॉरिडोर (IMEC) के शुभारम्भ की घोषणा की। IMEC दो महाद्वीपों में फैला एक अंतरराष्ट्रीय रेल, शिपिंग और सड़क परिवहन मार्ग है, जो व्यापार और आर्थिक गतिविधियों को सुविधाजनक बनाएगा। IMEC में भारत को गल्फ क्षेत्र से जोड़ने वाला एक पूर्वी कॉरिडोर और गल्फ क्षेत्र को यूरोप से जोड़ने वाला एक उत्तरी कॉरिडोर शामिल है।

IMEC का उद्देश्य महाद्वीपों में बेहतर कनेक्टिविटी और आर्थिक एकीकरण के माध्यम से सस्टेनेबल और समावेशी विकास को बढ़ावा देना है। इसका उद्देश्य वाणिज्यिक केंद्रों के माध्यम से महाद्वीपों को जोड़ना, स्वच्छ ऊर्जा तक पहुँच का विस्तार करना, समुद्र के नीचे केबल स्थापित करना, ऊर्जा ग्रिडों को जोड़ना और दूरसंचार बुनियादी ढाँचे में सुधार करना है। कॉरिडोर के लक्ष्यों में मौजूदा व्यापार को बढ़ावा देना, आपूर्ति श्रृंखलाओं को मज़बूत करना और खाद्य सुरक्षा को बढ़ाना शामिल है।

IMEC परियोजना में भारत, संयुक्त अरब अमीरात, सऊदी अरब, यूरोपीय संघ, फ्रांस, इटली, जर्मनी और अमरीका शामिल हैं। यह कॉरिडोर पार्टनरशिप फ़ॉर ग्लोबल इंफ्रास्ट्रक्चर इन्वेस्टमेंट का हिस्सा है, जो विकासशील देशों में बुनियादी ढाँचा परियोजनाओं को वित्त पोषित करने के लिए G7 देशों द्वारा एक सहयोगात्मक प्रयास है।

सहयोग, नवाचार और साझा प्रगति का प्रतीक

वर्तमान में, भारत और यूरोप के बीच सारा व्यापार स्वेज़ कनाल से होकर गुज़रने वाले समुद्री मार्ग से होता है। वैश्विक कनेक्टिविटी और सतत विकास में एक नए अध्याय की शुरुआत करते हुए, IMEC वैश्विक व्यापार और अर्थव्यवस्था को सुविधाजनक बनाने वाले मौजूदा व्यापार मार्गों का पूरक होगा। यह कॉरिडोर भारत को वैश्विक वाणिज्य, डिजिटल संचार और ऊर्जा नेटवर्क में महत्त्वपूर्ण भूमिका प्रदान करेगा।

IMEC भारत, मध्य-पूर्व और यूरोप को अत्याधुनिक परिवहन और संचार बुनियादी ढाँचे से जोड़ेगा। भारत से यूरोप, संयुक्त अरब अमीरात, सऊदी अरब, जॉर्डन और इज़राइल तक रेलवे लाइनों और बंदरगाह कनेक्शन के एकीकरण से माल का परिवहन आसान और तेज़ हो जाएगा, समुद्र के नीचे केबल से दूरसंचार और डाटा स्थानांतरण मज़बूत होगा और एक ऊर्जा बुनियादी ढाँचा तैयार होगा, जिससे सभी भागीदारों को ग्रीन हाइड्रोजन के उत्पादन और परिवहन को सक्षम करने के लिए विकसित किया जा सके।

IMEC की कल्पना एक मल्टी-मॉडल परिवहन नेटवर्क के रूप में की गई है, जो दो महाद्वीपों के क्षेत्रों को समुद्र और भूमि मार्गों के माध्यम से जोड़ेगा, जिससे व्यापार और आर्थिक गतिविधियों को सुविधाजनक बनाया जा सके। विभिन्न क्षेत्रों में इस परिवर्तनकारी एकीकरण में ज़बरदस्त वाणिज्यिक अवसरों को अनलॉक करने और वैश्विक व्यापार मार्गों को नया आकार देने के लिए दीर्घकालिक प्रभाव डालने की क्षमता है।

जैसा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने कहा है, यह कॉरिडोर सहयोग, नवाचार और साझा प्रगति के प्रतीक के रूप में आने वाले सैकड़ों वर्षों के लिए विश्व व्यापार का आधार बनने जा रहा है।

IMEC के प्रमुख लाभ

- लॉजिस्टिक दक्षता बढ़ेगी, व्यावसायिक लागत कम होगी, आर्थिक एकता को बढ़ावा मिलेगा, ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन में कमी आएगी
- क्रॉस-बॉर्डर वस्तुओं और सेवाओं के लिए भरोसेमंद और लागत प्रभावी शिप-टू-रेल ट्रांज़िट स्थापित होगा
- रेल लिंक से भारत-यूरोप व्यापार में 40% की तेज़ी आएगी
- यह आर्थिक सम्बन्धों को मज़बूत करेगा, नागरिकों और व्यापार के लिए वस्तुओं, ऊर्जा और डाटा तक पहुँच में सुधार करेगा
- यह मौजूदा व्यापार और विनिर्माण को बढ़ावा देगा, खाद्य सुरक्षा और आपूर्ति शृंखलाओं को मज़बूत करेगा
- यह निजी क्षेत्र सहित भागीदारों से नए निवेश को अनलॉक करेगा
- इससे रोज़गार सृजन को बढ़ावा मिलेगा

संजय सुधीर
संयुक्त अरब अमीरात में भारत के राजदूत

इंडिया-मिडिल ईस्ट-यूरोप इकोनॉमिक कॉरिडोर : व्यापार के नए अवसर

इंडिया - मिडिल ईस्ट - यूरोप इकोनॉमिक कॉरिडोर (IMEC) प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की परिकल्पना है। यह प्रमुख परियोजना G20 शिखर सम्मेलन के सबसे महत्त्वपूर्ण और ठोस परिणामों में से एक है। आज की दुनिया में कनेक्टिविटी का अपना महत्त्व है और यह परियोजना सभी महाद्वीपों में कनेक्टिविटी को एक बहुत ही अलग स्तर पर ले जाएगी।

IMEC के लाभ व्यापार से आगे तक जाते हैं और यह कनेक्टिविटी परियोजना वास्तव में लॉजिस्टिक्स से कहीं आगे तक जाती है। यह न केवल एक देश से दूसरे देश में कंटेनरों को ले जाने के पारम्परिक अर्थ के सन्दर्भ में लॉजिस्टिक कनेक्टिविटी के बारे में है, बल्कि ऑप्टिकल फ़ाइबर केबल के रूप में डिजिटल कनेक्टिविटी और ग्रीन हाइड्रोजन के रूप में ऊर्जा कनेक्टिविटी के बारे में भी है। यह बहुत व्यापक अर्थों में कनेक्टिविटी है और मुझे लगता है कि शायद देशों और महाद्वीपों के बीच इस तरह की यह पहली कनेक्टिविटी होगी।

इंडिया - मिडिल ईस्ट - यूरोप इकोनॉमिक कॉरिडोर सभी क्षेत्रों में फायदेमंद होगा। भारत के लिए संयुक्त अरब अमीरात (UAE) तो प्रमुख व्यापारिक भागीदार है ही, साथ ही गल्फ़ कॉपरेशन काउन्सिल (GCC) तथा यूरोप भी हैं। इसलिए इन सभी क्षेत्रों को लाभ होगा, न केवल उस प्रकार के आर्थिक समीकरण के कारण, जो UAE और GCC के साथ व्यापक आर्थिक साझेदारी समझौते (CEPA) के सन्दर्भ में विकसित हो रहे हैं, बल्कि यूरोपीय संघ और ब्रिटेन जैसे यूरोपीय देशों के साथ एक वित्तीय पारदर्शिता प्रणाली (FTS) भी पाइपलाइन में है। जब इन नई संरचनाओं को ठोस आकार मिलेगा, तो व्यापार के लिए नए मार्ग खुलेंगे और मौजूदा व्यापार वस्तुओं तथा रास्ते का और विस्तार होगा। IMEC इसे हासिल करने का एक आदर्श साधन साबित होगा।

कॉरिडोर में एक हाइब्रिड प्रकार का कनेक्टिविटी मॉडल होगा, क्योंकि यह भारत और गल्फ के बीच समुद्री कनेक्टिविटी से शुरू होता है तथा यह GCC के माध्यम से रेल और सड़क मार्ग तक जाएगा और फिर समुद्र के रास्ते हाइफा से यूरोप तक जाएगा। अंततः कॉरिडोर पूरे यूरोपीय देशों में सड़क मार्ग और रेलवे के रूप में चलेगा। यह इस सम्पूर्ण भौगोलिक क्षेत्र में परिवहन के सबसे कुशल साधनों का सर्वोत्तम लाभ उठाएगा।

UAE बहुत लम्बे समय से भारत का रणनीतिक साझीदार रहा है। 2017 में गणतंत्र दिवस समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में एच.एच. मोहम्मद बिन ज़ाएद अल नाहयान जब भारत यात्रा पर आए थे, हमने CEPA पर हस्ताक्षर किए थे। इस प्रकार UAE की भूमिका बहुत महत्त्वपूर्ण है, क्योंकि जब IMEC का हिस्सा GCC भाग से शुरू होगा, तो यह वास्तव में UAE से शुरू होगा और यदि आप पहले से ही विकसित बुनियादी ढाँचे को देखें, तो एतिहाद रेल परियोजना के चरण 1 और 2 में अधिकांश काम पहले ही हो चुका है। UAE की भूमिका इसलिए भी महत्त्वपूर्ण है, क्योंकि बाकी बुनियादी ढाँचे को पूरा करने में जहाँ भी ज़रूरत होगी, वह अन्य GCC देशों के साथ भूमिका निभा सकता है।

UNESCO वर्ल्ड हेरिटेज साइट्स

दे रहा भारत की सांस्कृतिक धरोहरों को वैश्विक पहचान

“कुछ ही दिन पहले शान्तिनिकेतन और कर्नाटक के पवित्र होयसला मंदिरों को वर्ल्ड हेरिटेज साइट्स घोषित किया गया है। भारत का प्रयास है कि हमारी ज़्यादा-से-ज़्यादा ऐतिहासिक और सांस्कृतिक जगहों को वर्ल्ड हेरिटेज साइट्स की मान्यता मिले।”

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी
(105वें 'मन की बात' सम्बोधन में)

दुनिया की सबसे पुरानी सभ्यताओं में से एक भारत सांस्कृतिक और भौगोलिक विविधता के साथ बहुसांस्कृतिक अनुभवों का मिश्रण है। असंख्य परिदृश्यों और आकर्षणों के साथ भारत की विरासत स्थलों की विशाल सम्पदा को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर मान्यता मिली है।

विश्व धरोहर स्थल असाधारण सांस्कृतिक या प्राकृतिक महत्त्व के स्थान होते हैं, जिन्हें UNESCO द्वारा उनके उत्कृष्ट सार्वभौमिक मूल्य के लिए मान्यता दी जाती है। ये स्थल सांस्कृतिक, प्राकृतिक और मिश्रित (सांस्कृतिक व प्राकृतिक) विरासत हो सकते हैं। ये विरासत स्थल महत्त्वपूर्ण हैं, क्योंकि वे किसी देश या क्षेत्र के इतिहास और संस्कृति की अनूठी जानकारी प्रदान करते हैं।

UNESCO का विश्व धरोहर मिशन

देशों को उनकी प्राकृतिक और सांस्कृतिक विरासत की सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए प्रोत्साहित करना

साइट्स की सुरक्षा के लिए तकनीकी सहायता और पेशेवर प्रशिक्षण प्रदान करना

तत्काल खतरे में विश्व धरोहर स्थलों के लिए आपातकालीन सहायता प्रदान करना

संरक्षण के लिए जन जागरूकता-निर्माण गतिविधियों का समर्थन करना

विरासत स्थलों के संरक्षण में स्थानीय भागीदारी को प्रोत्साहन देना

विश्व धरोहर के संरक्षण के लिए अंतरराष्ट्रीय सहयोग को प्रोत्साहन देना

विश्व धरोहर स्थल का चयन कैसे किया जाता है?

देशों द्वारा स्थलों की अस्थायी सूची तैयार करना

समीक्षा के लिए वर्ल्ड हेरिटेज सेंटर में नामांकन दाखिल करना

दो सलाहकार संस्थाओं द्वारा नामांकन का मूल्यांकन

विश्व विरासत समिति द्वारा अंतिम निर्णय

नोट : विश्व विरासत सूची में शामिल होने के लिए साइट्स को दस चयन मानदंडों में से कम से कम एक को पूरा करना होगा, जिन्हें विश्व विरासत सम्मेलन के कार्यान्वयन के लिए परिचालन दिशा-निर्देशों में समझाया गया है।

शान्तिनिकेतन का ऐतिहासिक शहर और होयसला के पवित्र मंदिर समूह के साथ आज भारत 42 UNESCO विश्व धरोहर स्थलों का घर है।

बढ़ते आर्थिक कद, अद्वितीय भौगोलिक विविधता और समृद्ध सांस्कृतिक विरासत के साथ भारत दुनिया भर से अधिक से अधिक पर्यटकों को आकर्षित कर रहा है। भारतीय पर्यटन क्षेत्र देश में सबसे तेज़ी से बढ़ते आर्थिक क्षेत्रों में से एक है। भारत की संस्कृति और विरासत को संरक्षित करने और बढ़ावा देने के लिए सरकार ने 'देखो अपना देश', 'एडॉप्ट ए हेरिटेज', 'स्वदेश दर्शन' सहित कई पहल की हैं।

भारतीय विरासत पर्यटन न केवल सांस्कृतिक और ऐतिहासिक संसाधनों की रक्षा करता है, बल्कि रोज़गार के अवसर और व्यवसाय पैदा कर और सरकार के साथ राजस्व में योगदान देकर स्थानीय अर्थव्यवस्था को भी सम्वर्द्धित करता है।

शान्तिनिकेतन

एक सांस्कृतिक स्थलचिह्न

17 सितम्बर को UNESCO ने शान्तिनिकेतन को भारत का 41वाँ विश्व धरोहर स्थल घोषित किया। UNESCO की यह स्वीकृति आधुनिक भारत के सांस्कृतिक और शैक्षिक परिदृश्य को आकार देने में शान्तिनिकेतन की भूमिका को मान्यता देती है।

शान्तिनिकेतन की स्थापना प्रसिद्ध कवि, दार्शनिक और नोबेल पुरस्कार विजेता रवीन्द्रनाथ टैगोर ने 1901 में ग्रामीण परिवेश में शिक्षा और सामुदायिक जीवन में एक प्रायोगिक क्षेत्र के रूप में की थी। पश्चिम बंगाल के बीरभूम ज़िले में स्थित शान्तिनिकेतन शैक्षणिक संस्थान, कलात्मक केंद्र और प्राकृतिक आश्रय का एक अनूठा मिश्रण है।

इस ऐतिहासिक शहर के केंद्र में विश्व भारती विश्वविद्यालय स्थित है, जो धार्मिक और सांस्कृतिक सीमाओं को पार कर मानवता को एकजुट करने के लिए टैगोर की सोच की अभिव्यक्ति थी। शान्तिनिकेतन की वास्तुकला सांस्कृतिक आदान-प्रदान के साथ-साथ निर्माण तकनीकों, सामग्री और डिज़ाइन के प्रयोग को प्रदर्शित करती है। भारतीय वास्तुकला जब ब्रिटिश शासन के तहत यूरोपीय पुनरुत्थानवादी शैलियों की चपेट में थी, शान्तिनिकेतन स्वदेशी निर्माण तकनीकों को पुनर्जीवित करने का एक साहसिक प्रयास था। इसकी योजना गुरुकुल की प्राचीन परम्पराओं के पुनरुद्धार को दर्शाती है।

शान्तिनिकेतन एक अंतरराष्ट्रीय सांस्कृतिक मिश्रण है, जो टैगोर के विचार 'वेयर द वर्ल्ड बिकम्स अ नेस्ट' का प्रतिध्वनित करता है। यह रवीन्द्रनाथ टैगोर के जीवनकाल के दौरान उनके महानतम कार्यों के आसवन का प्रतिनिधित्व करता है।

होयसला के पवित्र मंदिर समूह

भारत का अद्वितीय वास्तुशिल्प

होयसला के शानदार पवित्र मंदिर समूह को UNESCO की विश्व विरासत सूची में भारत के 42वें स्थल के रूप में अंकित किया गया है। कर्नाटक में स्थित बेलूर में चन्नकेशव मंदिर, हालेबिडु में होयसलेवारा मंदिर और सोमनाथपुरा में केशव मंदिर, 12वीं से 13वीं शताब्दी के होयसला शैली के मंदिर परिसरों के तीन सबसे प्रतिनिधि उदाहरण हैं, जो मध्ययुगीन होयसला साम्राज्य के दौरान बनाए गए थे। दक्षिणी भारत में इन होयसला मंदिरों की शाश्वत सुन्दरता और जटिल विवरण भारत की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत और हमारे पूर्वजों के असाधारण शिल्प कौशल का प्रमाण हैं।

होयसला शैली का विकास पड़ोसी राज्यों से अलग पहचान बनाने के लिए समकालीन मंदिर विशेषताओं और अतीत की विशेषताओं के सावधानीपूर्वक चयन के माध्यम से किया गया था। मंदिरों की विशेषता अति वास्तविक मूर्तियाँ और पत्थर की नक्काशी है, जो सम्पूर्ण वास्तुशिल्प की विधाओं को प्रदर्शित करती हैं। मूर्तिकला की उत्कृष्टता इन मंदिर परिसरों की कलात्मकता से प्रदर्शित होती है और हमारे देश की समृद्ध ऐतिहासिक और सांस्कृतिक विरासत की गवाही देती है।

होयसला मंदिरों में एक बुनियादी द्रविड़ियन आकृति विज्ञान है, लेकिन मध्य भारत में व्यापक रूप से उपयोग की जाने वाली भूमिजा विधा, उत्तरी और पश्चिमी भारत की नागर परम्पराएँ और कल्याणी चालुक्यों द्वारा समर्थित कर्नाट द्रविड़ विधाओं का भी यहाँ मज़बूत प्रभाव दिखता है।

विश्व विरासत सूची में भारत की दो नई धरोहर शामिल

विशाल शर्मा
UNESCO में भारत के स्थायी प्रतिनिधि

सऊदी अरब के रियाद में 8 से 25 सितम्बर, 2023 तक आयोजित विश्व धरोहर समिति के विस्तारित 45वें सत्र में भारत प्रतिष्ठित विश्व धरोहर सूची में 2022 और 2023 के लिए दो नामांकन प्राप्त करने में सफल रहा। ये हैं– पश्चिम बंगाल स्थित शान्तिनिकेतन और कर्नाटक स्थित होयसला के पावन मंदिर समूह।

प.बंगाल के ग्रामीण क्षेत्र में स्थित शान्तिनिकेतन विश्व प्रसिद्ध कवि, कलाकार, संगीतकार, दार्शनिक और साहित्य में नोबेल पुरस्कार (1913) से सम्मानित गुरुदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर के कार्यों और दर्शन से जुड़ा है। आरम्भ में यह इनके पिता द्वारा 1863 में स्थापित एक आश्रम था, जिसे 1901 में रवीन्द्रनाथ टैगोर ने गुरुकुल की प्राचीन भारतीय शिक्षण प्रणाली के आधार पर एक आवासीय विद्यालय और कला को समर्पित केंद्र के रूप में बदलना शुरू किया था। उनकी दृष्टि मानवता की एकता, यानी 'विश्व भारती' पर केंद्रित थी। शान्तिनिकेतन ने अन्तरराष्ट्रीयता का एक अद्वितीय ब्रांड अपनाया, जिसने भारत की प्राचीन, मध्ययुगीन और लोक परम्पराओं के साथ-साथ जापानी, चीनी, फ़ारसी, बाली, बर्मी और आर्ट डैको रूपों को आकर्षित किया। इनमें से कई विषय उनके कविता संग्रह 'गीतांजलि' में देखने को मिलते हैं, जो उन्होंने शान्तिनिकेतन में रहते हुए लिखी थी। शान्तिनिकेतन का आदर्श वाक्य एक प्राचीन संस्कृत श्लोक 'यत्र विश्वम् भवत्येक नीडम्' से लिया गया है, जिसका अर्थ है– 'वेयर द वर्ल्ड बिकम्स अ नेस्ट।' हर किसी को इस घोंसले का दौरा करने और शान्तिनिकेतन की सार्वभौमिकता अनुभव करने के लिए आमन्त्रित किया जाता है। यह भारत सरकार के संस्कृति मंत्रालय और भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण (ASI) के अथक प्रयासों का ही परिणाम है कि शान्तिनिकेतन का उत्कृष्ट सार्वभौमिक महत्त्व 17 सितम्बर, 2023 के दिन एजेंडा 45COM8B.10 के तहत प्रतिष्ठित विश्व धरोहर सूची में मान्यता प्रदान कर अंकित किया गया, जो भारत के माननीय प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के जन्मदिन पर एक सुखद संयोग रहा, क्योंकि वे शान्तिनिकेतन के कुलाधिपति भी हैं।

भारत के दूसरे नामांकन, होयसला शैली के पावन मंदिर समूह को भी इनके उत्कृष्ट सार्वभौमिक महत्त्व के लिए मान्यता प्रदान की गई और 18 सितम्बर, 2023 को एजेंडा आइटम 45COM8B.29 के तहत सूची में शामिल किया गया। अगर कभी कविता को पत्थर में उकेरा गया हो तो यह भारत के इन स्मारकों में देखी जा सकती है। यह भारत के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के भारतीय सांस्कृतिक स्थलों को विश्व स्तर पर बढ़ावा देने के प्रयास ही हैं, जिनसे कर्नाटक राज्य के इन शिलालेखों को वैश्विक स्तर पर पहचान मिली है। गणेश चतुर्थी की पूर्व संध्या पर विश्व धरोहर सूची में इनका शामिल होना भारतीयों के लिए एक अनुपम उपहार है। इसके लिए विदेश मंत्रालय, संस्कृति मंत्रालय (भारत सरकार), भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण (ASI) और राज्य के पुरातत्त्व विभाग के प्रयास और सहयोग प्रशंसा के पात्र हैं।

होयसला काल का अनेक रचनात्मक क्षेत्रों के अलावा आध्यात्मिक और मानवतावादी विचारों के विकास में बड़ा योगदान रहा। 12वीं शताब्दी के ये स्मारक बेलूर, हालेबिड्डु और सोमनाथपुरा में स्थित होयसलाकालीन 3 स्मारकों की शृंखला के नामांकन हैं। कन्नड़ भाषा में 'चन्ना केशव' का अर्थ है 'परोपकारी कृष्ण'। ये स्मारक, आध्यात्मिक उद्देश्य की असाधारण अभिव्यक्ति तथा साधना और सिद्धि के वाहक हैं। पश्चिमी घाट के पहाड़ी और वनीय इलाक़े की तराई में स्थित ये स्मारक चिरस्थायी पवित्रता के स्थल हैं, जहाँ प्रस्तर मूर्तियों और नक्काशी में शास्त्र, रामायण, महाभारत तथा श्रीमद्भागवत जैसे भारत के प्राचीन ग्रन्थों की कथाएँ उकेरी हुई हैं।

इन स्मारकों के साथ ही भारत में विश्व धरोहर स्थलों की कुल संख्या अब 42 हो गई है।

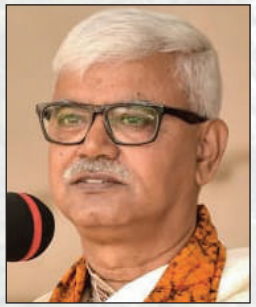

बिद्युत चक्रवर्ती
कुलपति, विश्व भारती

गुरुदेव के विज़न और योगदान को विश्व में सम्मान

सबसे पहले मैं नमन करना चाहता हूँ गुरुदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर को, जिन्होंने 1921 में जो यात्रा (विश्व भारती, शान्तिनिकेतन) शुरू की, उसका परिणाम आज 2023 में हमें मिला है। इसके बाद मैं धन्यवाद दूँगा हमारे माननीय आचार्य और प्रधानमंत्री मोदीजी को, जिनके मार्गदर्शन के बिना इस मुकाम पर हम लोग पहुँच नहीं पाते। 2011 में उचित महत्त्व न मिलने के कारण जो कामयाबी हमें तब नहीं मिली, वह प्रधानमंत्री मोदी द्वारा आवश्यक गुरुत्व मिलने के कारण सफल हुई और विश्व भारती वर्ल्ड हेरिटेज साइट बना। मैं माननीय आचार्यजी को प्रणाम करता हूँ कि उन्होंने समय पर हमारा मार्गदर्शन किया। जब भी कोई परेशानी उत्पन्न हुई, तब हमने प्रधानमंत्रीजी का सहारा लिया और समस्याओं का हल निकाला। आज गुरुदेव के विज़न और योगदान को विश्व में मान मिला है और विश्व भारती के साथ जुड़े हर व्यक्ति को भी आज विश्व में पहचान मिली है।

विश्व भारती और शान्तिनिकेतन को वर्ल्ड हेरिटेज साइट नामांकित करने के पीछे कल्चर डिपार्टमेंट और एजुकेशन डिपार्टमेंट का बहुत बड़ा हाथ रहा है। शिक्षा मंत्री धर्मेंद्र प्रधान जी का और संस्कृति मंत्री जी. किशन रेड्डी का मार्गदर्शन बहुत सहायक रहा और साथ ही आर्कियोलॉजिकल सर्वे ऑफ़ इंडिया (ASI) का, जिनकी मदद के बिना यह रिनोवेशन और UNESCO की स्वीकृति मिलना सम्भव नहीं होता।

शान्तिनिकेतन को UNESCO वर्ल्ड हेरिटेज साइट का टैग मिलने के बाद इसकी रक्षा करना सबसे ज़रूरी है और प्रधानमंत्रीजी के नेतृत्व में विश्व भारती को लोगों से पर्याप्त सहायता मिल रही है। 'मन की बात' में प्रधानमंत्रीजी ने कहा कि वर्ल्ड हेरिटेज साइट सबके लिए है तो यह सत्य है, क्योंकि इसमें सब लोगों को साथ मिलकर उसे संरक्षित करना है और भारत की ऐतिहासिक संस्कृति को बचाना है। साथ मिलकर करने से कोई भी काम मुश्किल नहीं है।

प्रो. एन. एस. रंगराजू

प्रोफेसर (सेवानिवृत्त), प्राचीन इतिहास और पुरातत्व विभाग, मैसूर विश्वविद्यालय

होयसला मंदिर : वास्तुकला की समृद्ध विरासत

होयसलावंशी दक्षिणी कर्नाटक के सबसे शक्तिशाली शासक थे। पहले वे कल्याणी चालुक्यों के अधीन थे, जिसके बाद वे स्वतंत्र राजा बन गए। 1117 ईस्वी में उन्होंने तलकाडु (वर्तमान कर्नाटक) में चोलों को हराया और इस पुराने मैसूर राज्य के हिस्से में पाँच नारायण मंदिरों का निर्माण किया। उनमें से एक तलकाडु में कीर्ति नारायण है, दूसरा चेलुवनारायण मंदिर है, जो मेलकोटे में है, गडग में वीरनारायण मंदिर, टोनूर में नम्बी नारायण और बेलूर में विजयनारायण मंदिर हैं। अब तक, कर्नाटक के इस हिस्से में 1,500 से अधिक होयसला शिलालेखों की पहचान की गई है।

यह गर्व का क्षण है कि तीन होयसला मंदिरों को UNESCO द्वारा मान्यता दी गई है। होयसला वंश ने 1,000 से अधिक मंदिरों का निर्माण कराया है। शुरुआती मंदिर बहुत सरल थे। उनमें केवल एक गर्भगृह और नवरंगा ही बने थे। होयसला मंदिरों के दूसरे चरण पर चोलों के साथ-साथ कल्याणी चालुक्यों का भी प्रभाव है। बाद में मंदिरों का निर्माण शास्त्रीय होयसला शैली में किया गया। इनके सबसे अच्छे उदाहरण बेलूर और सोमनाथपुरा में हैं। सोमनाथपुरा में शास्त्रीय शैली के अन्तिम मंदिर हैं। इनका निर्माण 1268 ई. में किया गया था। इन होयसला मंदिरों में एकल गर्भगृह (एककोटा) से लेकर दो गर्भगृह (दुइकोटा), तीन (त्रिकोटा), चार (चतुष्कोटा) और पाँच गर्भगृह (पंचकोटा) हैं।

त्रिकोटा बहुत महत्त्वपूर्ण है। इसमें तीन गर्भगृह हैं, जो तीन शुकनासियों ओर फिर सामान्य नवरंगा की ओर खुलते हैं। इस प्रकार के सभी होयसला मंदिरों का निर्माण जगती नामक ऊँचे चबूतरे पर किया गया है, जहाँ से कोई भी पूरे मंदिर की वास्तुकला शैली को देख सकता है। होयसला द्वारा दिया गया एक और महत्त्वपूर्ण तथ्य यह है कि मूर्तियों के नाम मूर्तियों के नीचे या पीठ पर लिखे गए हैं। दासोजा और मल्लीथम्मा जैसे कई नामों की पहचान की गई है।

जिस पत्थर से इन मंदिरों का निर्माण किया गया है, ये मंदिर उस कारण भी महत्त्वपूर्ण हैं। इसे क्लोराइट शिस्ट पत्थर कहा जाता है, जो आमतौर पर सोप स्टोन के रूप में जाना जाता है। इस पत्थर की अपनी एक विशेष प्रकृति होती है, क्योंकि इसमें कोई छिद्र नहीं होता। पत्थर के अणु सघन रूप से व्यवस्थित होते हैं, जो सूक्ष्म नक्काशी के लिए अच्छा होता है। होयसलों ने इन मंदिरों के निर्माण के लिए पत्थर की इस विशेषता का बखूबी उपयोग किया। समरूपता, ऊँचाई– सब कुछ ज्यामितीय रूप से डिज़ाइन किया गया है।

हमें गर्व है कि कर्नाटक को UNESCO मान्यता प्राप्त चार स्थल– तीन सांस्कृतिक स्थल और एक प्राकृतिक विरासत यानी पश्चिमी घाट मिले हैं। हालिया मान्यता निश्चित रूप से पर्यटन को बढ़ावा देने वाली है। हमने 2016 में इन मंदिरों को UNESCO की विश्व धरोहर घोषित करने की सिफारिश की थी। भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण के साथ-साथ राज्य पुरातत्व विभाग को भी धन्यवाद, क्योंकि उन्होंने इन्हें UNESCO की सूची में लाने के लिए चर्चा, निरीक्षण और प्रस्ताव बखूबी प्रस्तुत किया। सूची में प्रवेश करना आसान नहीं है, क्योंकि इसके नियम काफ़ी सख्त हैं।

सीमाओं के परे संगीत

कसैंड्रा मे का भारतीय कनेक्ट

“ जर्मनी की रहने वाली कैसमी कभी भारत नहीं आई है, लेकिन वह भारतीय संगीत की दीवानी है। जिसने कभी भारत को देखा तक नहीं, उसकी भारतीय संगीत में यह रुचि बहुत ही इंस्पाइरिंग है। ”

‘मन की बात’ के 105वें एपिसोड में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने जर्मनी की 21-वर्षीय कसैंड्रा मे की सराहना की, जो कभी भारत नहीं आई, लेकिन भारतीय संगीत की बहुत बड़ी प्रशंसक हैं।

जन्म से नेत्रहीन होते हुए भी कसैंड्रा ने कभी भी इस चुनौती को अपनी असाधारण उपलब्धियों में बाधा नहीं बनने दिया। संगीत और रचनात्मकता के प्रति उनका जुनून ऐसा था कि उन्होंने बचपन से ही गाना शुरू कर दिया था। उन्होंने तीन साल की उम्र में अफ्रीकी ड्रम बजाना शुरू कर दिया और हाल ही में पाँच या छह साल पहले उनका परिचय भारतीय संगीत से हुआ।

भारतीय संगीत ने उन्हें इतना मोहित किया कि वह उसमें पूरी तरह लीन हो गईं। 2018 में 16-वर्षीय कसैंड्रा ने तबला बजाना सीखा और नई भारतीय ध्वनियों और भाषाओं के साथ प्रयोग करना शुरू किया। उन्होंने संस्कृत, हिंदी, मलयालम, तमिल, कन्नड़, असमिया, बांग्ला, मराठी, उर्दू सहित कई भारतीय भाषाओं में गायन में महारत हासिल की।

उन्होंने कई संगीत समारोहों और योग रिट्रीट में भारतीय संगीत में अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन किया है और वह जर्मनी के कोलोन में ‘अनुभव अकादमी’ के तबला कलाकारों के समूह का भी हिस्सा हैं।

“ मैं बचपन से ही गा रही हूँ। जब भी कोई कार्यक्रम होता था तो मुझे मंच पर कूदने और गाने का मन करता था। मुझे अपने गीत लिखना भी पसंद है। जब मैं छह साल की थी, मैंने अपना पहला गीत लिखा। वह जर्मन में था और मैंने गाना भी गाया था। व्यावसायिक रूप से मैंने 11 या 12 साल की उम्र में गाना शुरू कर दिया था। मैंने अंग्रेज़ी सीखी और फिर अंग्रेज़ी, जर्मन, फ्रेंच, स्पैनिश और कई अन्य भाषाओं में गाया। मुझे उन सभी को आज़माने में मज़ा आया और 2017 में बर्कली कॉलेज ऑफ़ म्यूज़िक में मैंने भारतीय गीत और संगीत के बारे में जाना और कुछ महीनों के बाद मैंने भारतीय भाषाओं में गाना शुरू करने का साहस किया। मैंने हिन्दी से शुरुआत की और फिर अन्य भाषाओं में भी गाने का प्रयास किया। मैं कम-से-कम नौ या दस भारतीय भाषाओं में गाती हूँ, लेकिन बातचीत के लिए मैं हिन्दी का प्रयोग करती हूँ।

24 सितम्बर की सुबह मैं इंस्टाग्राम पर कई टेक्स्ट मैसेजेस और वॉयस मैसेज़ेस के साथ उठी। मुझे भारत में लोगों से बहुत सारे सन्देश मिले और यह एक सुखद आश्चर्य था और पूरी तरह से अप्रत्याशित भी। यह मेरे लिए बहुत अविश्वसनीय था कि लोग अपनी इंस्टाग्राम स्टोरीज़ के ज़रिए मेरा उत्साह बढ़ा रहे थे। उन्होंने मुझे इंस्टाग्राम पर वॉयस सन्देश भी भेजे। मैं भविष्य में भारत आने की इच्छा रखती हूँ और अपने दोस्तों से मिलना तथा वहाँ संगीत कार्यक्रम करना चाहती हूँ। ”

सभी के लिए शिक्षा

युवा-संचालित अनोखी पहलें

हमारे देश में शिक्षा को सदैव एक सेवा के रूप में देखा जाता है। यह सच है कि आज का युग डिजिटल तकनीक और ई-बुक्स का है, लेकिन फिर भी किताबें हमारे जीवन में हमेशा एक अच्छे दोस्त की भूमिका निभाती हैं। इसलिए हमें बच्चों को किताबें पढ़ने के लिए प्रेरित करना चाहिए।

-- प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी
(105वें 'मन की बात' में)

भारत में शिक्षा को एक मौलिक एवं मानव अधिकार के रूप में बरकरार रखा गया है। यह एक बुनियादी अधिकार है, जिसकी हर बच्चे तक पहुँच होनी चाहिए और इस अधिकार को संरक्षित करने के लिए सरकार के साथ-साथ नागरिकों ने विभिन्न पहलें की हैं ताकि देश के दूर-दराज़ के इलाकों में भी गुणवत्तापूर्ण शिक्षा पहुँचाई जा सके। इन सराहनीय प्रयासों में उत्तराखंड और आंध्र प्रदेश के युवाओं के नेतृत्व में की गई पहलें भी शामिल हैं, जिनकी प्रधानमंत्री ने हालिया 'मन की बात' एपिसोड में सराहना की।

नैनीताल की घोड़ा लाइब्रेरी पहल

उत्तराखंड में मानसून की चुनौतियों के बीच घोड़ा लाइब्रेरी आशा की एक किरण के रूप में उभर कर सामने आई है। घोड़ों के साथ गाँवों के बीच किताबें ले जाने वाली यह मोबाइल लाइब्रेरी, पढ़ने के लिए किताबों की हर घर तक पहुँच सुनिश्चित करती है। स्थानीय लोग भी अपने घोड़ों को इस पहल में शामिल करके समर्थन कर रहे हैं, जो पहल की प्रेरणा को बढ़ावा देता है।

"जब प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने 'मन की बात' में हमारी घोड़ा लाइब्रेरी पहल का उल्लेख किया तो हमें बहुत गर्व हुआ। हमारा लक्ष्य यह सुनिश्चित करना है कि हर बच्चे तक किताबें पहुँचाई जा सकें। प्रधानमंत्री के मार्गदर्शन से हमें विश्वास है कि हम इस उद्देश्य की दिशा में अपनी प्रगति में तेज़ी ला सकते हैं।"

– शुभम बधानी, संस्थापक, घोड़ा लाइब्रेरी

आर्कषणा सतीश का पुस्तकालय मिशन

हैदराबाद की 7वीं कक्षा की छात्रा, आर्कषणा सतीश को बच्चों में पढ़ने की संस्कृति को बढ़ावा देने के उल्लेखनीय प्रयासों के लिए प्रधानमंत्री से प्रशंसा मिली है। महज़ 11 साल की उम्र में उन्होंने दोस्तों, पड़ोसियों और रिश्तेदारों के योगदान से आंध्र प्रदेश और तमिलनाडु में 6,000 पुस्तकों के साथ 7 पुस्तकालय सफलतापूर्वक स्थापित किए हैं।

"एमएनजे कैंसर अस्पताल में अपनी यात्रा शुरू करते हुए, मैं एमएनजे निदेशक के सहयोग से **2,036** पुस्तकों के साथ अपनी पहली लाइब्रेरी स्थापित करने में समर्थ रही। सकारात्मक प्रतिक्रिया से उत्साहित होकर मैंने सनथ नगर पुलिस स्टेशन में **800 पुस्तकों** के साथ दूसरी लाइब्रेरी स्थापित की। फिर मैंने हैदराबाद में लड़कियों के लिए किशोर एवं पर्यवेक्षण गृह में **600 पुस्तकों** के साथ तीसरी लाइब्रेरी की स्थापना की। बोराबंदा में गायत्री नगर एसोसिएशन को **200 किताबें**, कोयम्बटूर सिटी पुलिस स्ट्रीट लाइब्रेरीज़ को **200 किताबें** और नोलम्बुर पुलिस स्टेशन में चेन्नई बॉयज़ क्लब को **1,200 किताबें** दान देने के साथ मेरा प्रयास जारी रहा। मेरी सबसे हालिया पहल सनथ नगर के सरकारी हाई स्कूल में **600** से अधिक पुस्तकों के साथ एक पुस्तकालय बनाना था। मेरा लक्ष्य साल के अंत तक तीन और पुस्तकालय स्थापित करने का है।"

– आर्कषणा सतीश

"घोड़ा लाइब्रेरी हर हफ्ते हमारे गाँव में आती है। मैंने उल्लू की कहानियों वाली एक किताब ली थी और मुझे इसकी कहानी काफ़ी दिलचस्प लगी। अगले हफ्ते लाइब्रेरी लौटने पर अगली किताब लेने की योजना बना रहा हूँ।" **– कृष्णा जोशी, छात्र**

वन्यजीव संरक्षण में सामुदायिक भागीदारी

> वन्यजीवों के प्रति करुणा का भाव रखें, हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि हमारे अधिकांश देवताओं के वाहक पशु और पक्षी हैं। हमें उनकी रक्षा करनी चाहिए, क्योंकि वे हमारी आस्था का केंद्र भी हैं। हाल के वर्षों में हमने शेरों, बाघों, तेंदुओं और हाथियों की संख्या में सराहनीय वृद्धि देखी है, जो प्रकृति के संरक्षण के प्रति हमारी प्रतिबद्धता का प्रमाण है।
>
> -प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी
> (105वें 'मन की बात' सम्बोधन में)

भारत, अपनी गहन सांस्कृतिक विरासत के साथ वन्य जीवन को बहुत सम्मान देता है। पवित्र अनुष्ठानों, त्योहारों और परम्पराओं ने जानवरों को ज्ञान और आध्यात्मिकता के प्रतीक के रूप में प्रतिष्ठित किया है। आधुनिक समय में, वन्यजीव संरक्षण एक सर्वोच्च राष्ट्रीय प्राथमिकता है, जो सरकार और उसके नागरिकों का संयुक्त प्रयास है। सरकार द्वारा बनाए गए कड़े कानून वन्यजीवों के प्रति खतरों का मुकाबला करते हैं और राष्ट्रीय उद्यान, अभयारण्य और संरक्षण, इन अनमोल प्रजातियों की रक्षा करते हैं। स्थानीय समुदाय और संगठन सक्रिय रूप से आवासों को पुनर्स्थापित करते हैं और सार्वजनिक जागरूकता बढ़ाते हैं। यह भारत की समृद्ध प्राकृतिक विरासत के लिए एक सामूहिक ज़िम्मेदारी है। प्रधानमंत्री ने 'मन की बात' में ऐसी दो पहलों का ज़िक्र किया।

सुखदेव भट्ट : वन्यजीव संरक्षण के निडर चैंपियन

सुखदेव भट्ट राजस्थान के पुष्कर में एक समर्पित वन्यजीव संरक्षणवादी हैं, जो अपनी टीम 'कोबरा' के साथ इस क्षेत्र में घातक साँपों को बचाने के लिए निडर होकर बचाव कर रहे हैं। उनकी अटूट प्रतिबद्धता ज़हरीले साँपों को बचाने से कहीं आगे तक जाती है, क्योंकि वे मनुष्यों और वन्यजीवों की ज़रूरतों पर तेजी से प्रतिक्रिया देते हैं। उनके प्रयास बीमार जानवरों की सहायता करने तक फैले हुए हैं, जो सभी जीवित प्राणियों के प्रति उनकी प्रतिबद्धता का उदाहरण है।

"मैं एक पत्रकार और साँप बचावकर्ता के रूप में जाना जाता हूँ, मैंने 500 से अधिक ज़हरीले साँपों को बचाया है। हमारी टीम, जिसका नाम 'कोबरा टीम राजस्थान' है, ने नाग पहाड़ में 30,000 साँपों को बचाया है और 500 प्रजातियों का संरक्षण किया है। हम वन विभाग के दिशा-निर्देशों का सख्ती से पालन करते हैं और अपने काम के प्रति प्रतिबद्ध हैं।"

एक ऑटो चालक और पक्षियों के बीच अनोखा सम्बन्ध

तमिलनाडु के चेन्नई में रहने वाले ऑटो ड्राइवर एम. राजेन्द्र प्रसाद पिछले 25-30 साल निःस्वार्थ भाव से कबूतरों की सेवा में समर्पित हैं। वर्तमान में वे अपने घर में 200 से अधिक कबूतरों की देखभाल करते हैं। अटूट प्रतिबद्धता के साथ, वे पक्षियों की सभी ज़रूरतों को पूरा करते हैं।

"विरोध और स्वास्थ्य सम्बन्धी चिन्ताओं का सामना करने के बावजूद, कबूतर पालने के प्रति मेरा अटूट प्रेम कभी कम नहीं हुआ। महामारी के दौरान, मुझे अपने कबूतरों के साथ रहकर समय बिताते हुए सान्त्वना मिली। उनके घोंसले मेरे लिए जैसे एक पुण्यस्थान हैं। मैं पैसे, लालच या प्रसिद्धि की इच्छा के बिना ही अपना जीवन बिताता हूँ। मैं कबूतर पालने और एक ऑटो-रिक्शा चालक, दोनों के रूप में कड़ी मेहनत कर रहा हूँ, बिना ऋण लिए अपनी बेटियों की शिक्षा का प्रबंध कर रहा हूँ।"

भारत का कर्तव्य काल
कर्तव्य का आह्वान और विकास का वादा

प्रधानमंत्री ने आज़ादी के अमृत महोत्सव के बाद के अगले 25 वर्षों को भारत का अमृत काल करार दिया है। इस महत्त्वपूर्ण अवधि के केंद्र में है कर्तव्य की अवधारणा — साझा ज़िम्मेदारी, जो देश के प्रत्येक नागरिक को एकजुट करती है। 'कर्तव्य काल' वह समय है, जब आत्मनिर्भरता और जनभागीदारी की शक्ति के माध्यम से हम एक उज्ज्वल कल के लिए अपनी सामूहिक आकांक्षाओं की ओर अग्रसर हैं।

सोत नदी का पुनर्जीवन
जनभागीदारी की एक उल्लेखनीय कहानी

सम्भल में सामूहिक प्रयास और जनभागीदारी का एक उल्लेखनीय उदाहरण देखने को मिला, जब 70 से अधिक ग्राम पंचायतें विलुप्त हो चुकी सोत नदी को पुनर्जीवित करने के लिए एक साथ आईं। उनके दृढ़ संकल्प और कड़ी मेहनत ने नदी को पुनर्जीवित किया, जिससे स्थानीय किसानों और पारिस्थितिकी तंत्र को लाभ हुआ।

"सोत नदी, जो कभी सम्भल ज़िले में महत्त्वपूर्ण थी, समय के साथ लुप्त हो गई थी। MGNREGA योजना के तहत, हमने सम्भल में नवम्बर, 2022 से सोत नदी पुनर्जीवन परियोजना की शुरुआत की, जून-जुलाई, 2023 तक इसे सफलतापूर्वक पूरा किया गया। यह नदी आज पाँच विकास खंडों में 71 ग्राम पंचायतों से होकर गुज़रती है, अतिक्रमित भूमि को पुनः प्राप्त करके शुरुआत करते हुए हमारे प्रयासों में हमारा साथ एसडीएम और तहसीलदारों ने दिया और ग्राम विकास अधिकारी के तहत एक समर्पित मनरेगा टीम की मदद से नदी का पुनरुद्धार शुरू किया। समय पर हुई बारिश ने इस पुनरुद्धार में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई, जिससे किसानों की खुशी और बढ़ गई। नदी सिंचाई स्रोत के रूप में काम करेगी और जल स्तर में सुधार करने में मदद करेगी। हमारी भविष्य की योजनाओं में क्षेत्र की अन्य नदियों को पुनर्जीवित करना और प्राकृतिक संसाधनों को पुनर्जीवित करने में समुदाय और सरकारी प्रयासों के सकारात्मक प्रभाव को उजागर करना शामिल है।"

– मनीष बंसल, डीएम, सम्भल (उत्तर प्रदेश)

शकुंतला सरदार
साल पत्तों के शिल्प के माध्यम से बनीं आत्मनिर्भर

पश्चिम बंगाल की शकुंतला सरदार ने सिलाई मशीन का उपयोग करके 'साल' के पत्तों पर सुंदर डिज़ाइन बनाकर दूसरों को प्रेरित किया और यहाँ तक कि अपने बच्चों के उज्ज्वल भविष्य के लिए जीवन बीमा में निवेश करके अपने परिवार का जीवन बदल दिया।

"मैं घर पर साल के पत्ते सिलती हूँ, रोजाना 150-200 रुपये कमाती हूँ, जिसके ज़रिए वित्तीय स्वतंत्रता हासिल की और योजना के साथ अपने बच्चों का भविष्य सुरक्षित कर सकी। पहले हम सीमित कृषि भूमि के कारण दैनिक मजदूरी पर निर्भर थे और गुजारा करने के लिए संघर्ष करते थे। हालाँकि, हमारे गाँव में साल के पत्तों की प्रचुरता ने आत्मनिर्भरता का मार्ग प्रशस्त किया। मेरे बच्चे दो साल से 'साल के पत्तों' की सिलाई में मेरे साथ शामिल हैं। प्रारम्भ में, अपने बच्चों को कृषि क्षेत्रों में ले जाना चुनौतीपूर्ण था और सिलाई मशीन खरीदना असम्भव लगता था। तभी हमारे स्व-सहायता समूह ने कदम बढ़ाया, सहायता प्रदान की और मुझे घर से काम करने में सक्षम बनाया। हमने उचित मेहनताना सुनिश्चित करते हुए स्थानीय महिलाओं से साल के पत्ते खरीदने का फैसला किया। हमने इन पत्तों को उपयोगी वस्तुओं में सिलकर, इसमें शामिल सभी लोगों के लिए उचित वेतन को बढ़ावा देकर आय का एक नया स्रोत भी बनाया है।"

-शकुंतला सरदार, सतनाला गाँव, पश्चिम बंगाल

स्वच्छता ही सेवा

प्रण से क्रियान्वयन तक

“केन्द्र सरकार के सभी कार्यालयों में ‘स्वच्छता ही सेवा’ अभियान बड़े उत्साह के साथ चल रहा है। स्वच्छता की यह कार्यांजलि ही गाँधीजी को सच्ची श्रद्धांजलि होगी।”

-प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी
(‘मन की बात’ सम्बोधन में)

“महात्मा गाँधी ने एक ऐसे भारत का सपना देखा था, जो न केवल स्वतन्त्र हो, बल्कि स्वच्छ और विकसित भी हो। एक स्वच्छ भारत, महात्मा गाँधी को 2019 में उनकी 150वीं जयन्ती पर भारत की सर्वश्रेष्ठ श्रद्धांजलि होगी।”

–प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी

इन शब्दों के साथ प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने 2 अक्तूबर, 2014 को राष्ट्रव्यापी स्वच्छ भारत मिशन आरम्भ किया था, जिसका उद्देश्य हर तरफ़ स्वच्छता के प्रयासों में तेज़ी लाना और स्वच्छता पर ध्यान एकाग्र करना है।

स्वच्छ भारत मिशन के 9 वर्ष– अतिसार, मलेरिया, मृत शिशु जन्म और जन्म के समय शिशु के कम वज़न के मामलों में कमी के साथ 4 लाख से अधिक ODF-प्लस गाँवों के लिए महत्त्वपूर्ण पड़ाव साबित हुए हैं। इसके साथ ही 11,24,35,128 घरेलू शौचालयों का निर्माण किया गया। मिशन की उपलब्धियाँ एक स्वच्छ और स्वस्थ भारत की दिशा में महत्त्वपूर्ण क़दम हैं। इस अभियान के तहत गाँवों और शहरों में साफ़-सफ़ाई पर बल देने के लिए ‘स्वच्छ भारत ग्रामीण एवं शहरी’, स्वच्छता और साफ़-सफाई को बढ़ावा देने के लिए ‘स्वच्छ स्वस्थ सर्वत्र’, देश भर के महत्त्वपूर्ण स्मारकों एवं ऐतिहासिक स्थलों पर साफ़-सफ़ाई बेहतर करने के उद्देश्य से ‘स्वच्छ प्रतिष्ठित स्थल’, स्कूलों में स्वच्छता के लिए ‘स्वच्छ भारत-स्वच्छ विद्यालय’ सहित अनेक कार्यक्रम आरम्भ किए गए तथा कम्पनी जगत से योगदान और परोपकार दान राशि प्राप्त करने के लिए ‘स्वच्छ भारत कोष’ भी स्थापित किया गया, साथ ही, ‘ODF प्लस’ गाँवों और क़स्बों को खुले में शौच से मुक्त रखने की दिशा में कार्य करता है और ‘स्वच्छ सर्वेक्षण’ स्वच्छता सम्बन्धी वार्षिक सर्वेक्षण करके शहरों और क़स्बों को क्रमांकित करता है।

अभी हाल ही में राष्ट्र ने स्वच्छता ही सेवा– एसएचएस-2023 की शुरुआत करके स्वच्छता पखवाड़ा मनाया, जिसका विषय कचरा-मुक्त भारत है। इस पखवाड़े का शुभारम्भ स्वयं प्रधानमंत्री ने झाड़ू लगाकर किया और यह प्रदर्शित किया कि स्वस्थ तन और मन का स्वच्छता से गहरा सम्बन्ध है। उनके आह्वान का राजनेताओं, जानी-मानी शख़्सियतों, विद्यार्थियों और आम जनता पर असर पड़ा और यह एक जन-आन्दोलन में बदल गया।

प्रधानमंत्री के ‘एक तारीख़, एक घंटा, एक साथ’ के आह्वान के तहत पूरी सरकार ने नागरिकों के साथ मिलकर एक अक्तूबर, 2023 को सुबह 10 बजे विभिन्न स्थानों पर स्वच्छता अभियान आयोजित किया। विभिन्न मंत्रालयों और विभागों ने एसएचएस अभियान में विशिष्ट योगदान दिया। पर्यटन मंत्रालय ने 108 चुने हुए स्थलों पर स्वच्छता अभियान के लिए ‘ट्रैवल फॉर लाइफ़’ शुरू किया। सूचना और प्रसारण मंत्रालय ने देश भर के सिनेमाघरों में एसएचएस वीडियो की स्क्रीनिंग सुनिश्चित की। दूरसंचार विभाग ने सभी मोबाइल नेटवर्क पर एसएचएस

“मेरा मानना है कि यह एक बहुत ही महत्त्वपूर्ण पहल है और गाँधीजी भी स्वच्छता में बहुत विश्वास करते थे, इसलिए यह महत्त्वपूर्ण है कि हम उनके दिखाए गए रास्तों का अनुकरण करें।”

-राजकुमार राव
अभिनेता

रिंगटोन का प्रसारण किया। नागरिक उड्डयन विभाग, रेलवे बोर्ड और भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण ने हवाई अड्डों और रेलवे क्षेत्रों में अभियान का समर्थन किया, प्रमुख स्मारकों को एसएचएस ब्रांडिंग के साथ रोशन किया। स्कूल शिक्षा और साक्षरता विभाग ने सभी स्कूलों में स्वच्छता गतिविधियाँ बढ़ाईं और उच्च शिक्षा विभाग ने महाविद्यालयों और विश्वविद्यालयों को स्वच्छता को बढ़ावा देने के लिए प्रोत्साहित किया।

इस अभियान का एक अन्य उल्लेखनीय पहलू सफ़ाई नायकों की भलाई पर ध्यान केन्द्रित करना था– सफ़ाईमित्रों की स्वास्थ्य सम्बन्धी जाँच की गई और योग सत्र आयोजित किए गए, जिनमें महिला स्व-सहायता समूहों, स्कूल-कॉलेजों के युवाओं, सागर-तट, पार्क और अन्य सार्वजनिक स्थानों पर एकत्र होने वाले वरिष्ठ नागरिकों सहित समाज के विभिन्न वर्गों ने सक्रिय रूप से हिस्सा लिया। टीम इंडिया की भावना के साथ स्वच्छता प्रतिज्ञा, स्वच्छता दौड़, कार्यालयों, रेलपटरियों, हवाईअड्डों, सैलानी स्थलों, तीर्थस्थानों, शिक्षा संस्थानों, राजमार्गों, चिड़ियाघरों, अभयारण्यों तथा उद्यानों में स्वच्छता अभियान चलाने से पर्यावरण में नव-प्राण का संचार हुआ, जिसने स्वच्छ एवं स्वस्थ वातावरण का निर्माण किया।

स्वच्छ भारत अभियान के लगभग एक दशक के दौरान भारत में साफ़-सफ़ाई की स्थिति बेहतर होने से स्वास्थ्य लाभ मिला है और ग्रामीण समुदायों के सार्वजनिक व्यवहार में बड़ा परिवर्तन आया है। खुले में शौच से मुक्ति मिलने से पर्यटन बढ़ा और अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर देश की छवि सुधारने में मदद मिली। 2024-25 में भी सरकार की प्राथमिकता सम्पूर्ण और स्वच्छ भारत पर केंद्रित रहेगी और यह 2023 के 'स्वच्छता ही सेवा' अभियान से स्पष्ट है, जिसने लोगों में स्वैच्छिक और सामुदायिक स्तर पर भागीदारी को प्रोत्साहित किया और यह स्पष्ट कर दिया कि व्यक्तिगत, सामुदायिक और सरकारी एजेन्सियों के स्तर पर जब किसी अभियान के लिए दृष्टिकोण और प्रतिबद्धता एक समान होती है तो उल्लेखनीय उपलब्धियाँ हासिल की जा सकती हैं।

क्लीनाथॉन 2.0

स्वच्छता ही सेवा अभियान के लिए मुम्बई की मशहूर हस्तियाँ, वहाँ के निवासी और छात्र प्रसिद्ध जुहू बीच पर क्लीनाथॉन 2.0 में शामिल हुए।

"भगवान वहीं निवास करते हैं, जहाँ स्वच्छता होती है। चाहे हमारा पर्यावरण हो, हमारा मन हो या हमारा स्वास्थ्य, स्वच्छता हर जगह महत्त्वपूर्ण है। हर किसी को यह पहल करनी चाहिए और ज़िम्मेदारी उठानी चाहिए।"

- ईशा कोप्पिकर, अभिनेत्री

"यदि हम अपनी अगली पीढ़ी को एक सुन्दर, रोगमुक्त पृथ्वी देना चाहते हैं, यदि हम अपनी अर्थव्यवस्था को बढ़ावा देने के लिए पर्यटन चाहते हैं, यदि हम समुद्री जीवन चाहते हैं, तो स्वच्छता महत्त्वपूर्ण है।"

-अमृता फडणवीस, गायिका एवं सामाजिक कार्यकर्ता

"मेरा मानना है कि यह एक बहुत ही महत्त्वपूर्ण पहल है और गाँधीजी भी स्वच्छता में बहुत विश्वास करते थे, इसलिए यह महत्त्वपूर्ण है कि हम उनके दिखाए गए रास्तों का अनुकरण करें।"

-राजकुमार राव, अभिनेता

"यह आपको खुद ही करना होगा, क्योंकि आप यह अपने लिए कर रहे हैं, किसी और के लिए नहीं।स्वच्छता रहेगी तो हम स्वस्थ रहेंगे।"

- जैकी भगनानी, अभिनेता एवं निर्माता

"मुझे खुशी है कि इंडस्ट्री से इतने सारे लोग यह सन्देश देने के लिए यहाँ आए हैं कि हम आम लोग हैं, इसलिए हमें सफाई करनी चाहिए और अपने शहर को साफ़ रखना चाहिए। स्वच्छता और सेवा का प्रत्यक्ष उदाहरण आज आप देख सकते हैं कि आम लोग आकर समुद्र तट की सफ़ाई कर रहे हैं।"

- मानुषी छिल्लर, अभिनेत्री एवं मिस वर्ल्ड 2017

"यह बहुत महत्त्वपूर्ण है कि हम देश में स्वच्छता बनाए रखें ताकि हमारे प्राकृतिक परिवेश की सुन्दरता बरकरार रहे। सरकार द्वारा शुरू किए गए 'स्वच्छता ही सेवा' अभियान ने मुम्बई के आकर्षण को बढ़ाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है। इस स्वच्छता अभियान का पर्यटन, उद्योग, समुद्री पारिस्थितिकी तंत्र और शहर के जनसांख्यिकीय परिदृश्य पर सकारात्मक प्रभाव पड़ा है। हम लोगों से प्लास्टिक बैग के स्थान पर पेपर बैग जैसे पर्यावरण-अनुकूल विकल्पों का उपयोग करने का आग्रह करते हैं।"

-छात्र, एनएल कॉलेज, मलाड

"15 सितम्बर से 'स्वच्छता ही सेवा' अभियान शुरू हुआ और एनएसएस इसमें बड़ी भूमिका निभा रहा है। विभिन्न प्रकार की गतिविधियों को शामिल किया गया है, चाहे वह सफाई अभियान हो, पेड़ लगाना हो या स्वच्छता के बारे में जागरूकता बढ़ाना हो और मुख्य गतिविधि स्वच्छता पखवाड़ा है। छात्रों ने फेंके गए फूलों, प्लास्टिक सहित बहुत सारा कचरा एकत्र किया, जो समुद्र और समुद्री जीवन के लिए बहुत हानिकारक है। यह हमारे देश की सेवा और लोगों को धरती माता की सेवा के लिए प्रेरित करने का एक अध्याय है।"

-छात्र, प्रवीण गाँधी कॉलेज, मुम्बई

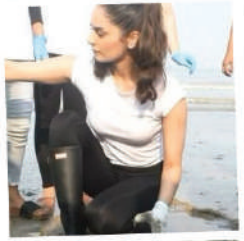

मन की बात

प्रतिक्रियाएँ

CassMae
@CassMaeSpittman

I'm so out of words for this huge appreciation of what I'm doing with my greatest passion, it will take me a while to realize this really happened. Thank you @narendramodi for saying your kind lines about me, so happy I can spread your languages & peaceful music in today's world.

> **Narendra Modi** @narendramodi · Sep 24
> You will be spellbound hearing CassMae sing in Indian languages. She belongs to Germany and is visually impaired but that has not deterred her from pursuing her passion for music. #MannKiBaat

6:56 PM · Sep 24, 2023 · **366.4K** Views

Swachh Bharat Urban
@SwachhBharatGov

आज #MannKiBaat के दौरान PM श्री @narendramodi जी ने समस्त देशवासियों को 1 अक्टूबर को सुबह 10 बजे, 1 घंटे के लिए एकजुट होकर #SwachhataHiSeva में भागीदारी करके बापू जी को सच्ची श्रद्धांजली देने के लिए प्रेरित किया।
#SwachhBharat
Translate post

11:54 PM · Sep 24, 2023 · **1,332** Views

Gajendra Singh Shekhawat
@gssjodhpur

यूपी के संभल जिला के लोगों ने जनभागीदारी और सामूहिकता की मिसाल कायम की है है। 70 गांवों ने एकजुट होकर सोत नदी को पुनर्जीवित किया है।

आपको ये जानकर खुशी होगी कि साल के पहले 6 महीने में ही ये लोग नदी के 100 किलोमीटर से ज्यादा रास्ते का पुनरुद्धार कर चुके थे।

जब बारिश का मौसम शुरू हुआ तो यहां के लोगों की मेहनत रंग लाई और सोत नदी, पानी से, लबालब भर गई।

#MannKiBaat
Translate post

12:12 pm · 24 Sep 2023 · **3,684** Views

Bhupender Yadav
@byadavbjp

हमारे शास्त्रों में कहा गया है:
जीवेषु करुणा चापि, मैत्री तेषु विधीयताम्।

बीते कुछ वर्षों में, देश में, शेर, बाघ, तेंदुआ और हाथियों की संख्या में उत्साहवर्धक बढ़ोत्तरी देखी गई है।

#MannKiBaat
Translate post

8:02 PM · Sep 24, 2023 · **3,195** Views

Piyush Goyal
@PiyushGoyal

हमारे देश में त्योहारों का season भी शुरू हो चुका है, उमंग और उत्साह के त्योहारों में आप 'Vocal for Local' के मंत्र को जरूर याद रखें।
Translate post

12:29 PM · Sep 24, 2023 · **18.7K** Views

IRCTC
@IRCTCofficial

🇮🇳✨ Prime Minister Modi's #MannKiBaat resonates with the spirit of exploring India's rich heritage! 🏛️🌄

Let's embark on a cultural journey to Shanti Niketan and Hampi, two @UNESCO World Heritage Sites that beckon with history and beauty. 🚂🗺️

Explore, experience, and embrace India's glorious past. 📜📸

Book your journey today with irctctourism.com

#IncredibleIndia #HeritageTourism #PMModi

Last edited 11:03 AM · Sep 25, 2023 · **1,778** Views

G20 India
@g20org

Youth power: the driving force of #G20India!

In his monthly #MannKiBaat address, Prime Minister @narendramodi highlighted India's initiatives at the #G20 Summit and appreciated the role of youth in a successful People's Presidency.

📽️ Watch the snippet.

2:50 PM · Sep 24, 2023 · **9,275** Views

G Kishan Reddy
@kishanreddybjp

India has many World Heritage sites and their numbers are increasing rapidly.

Recently @UNESCO has added Santiniketan & Karnataka's historic Hoysala temples to its heritage list, recognition by UNESCO marks respect for India's tradition of Temple Architecture.

I urge all to learn about cultures of different states & visit World Heritage sites:
PM Shri @narendramodi

#MannKiBaat

7:09 PM · Sep 24, 2023 · **2,987** Views

K.Annamalai
@annamalai_k

Our Hon PM Thiru @narendramodi avl mentioned the unique service of Auto Driver Rajendra Prasad Anna in #MannKiBaat today.

12:21 pm · 24 Sep 2023 · **44.7K** Views

Himanta Biswa Sarma
@himantabiswa

In #MannKiBaat today, Hon PM Shri @narendramodi Ji emphasised that 'Azadi Ka Amrit Kaal' is also 'Kartavya Kaal' for every citizen of the country.

We wholeheartedly concur with this perspective. It signifies not just a celebration of our freedom but also a time to reaffirm our duties and responsibilities towards our nation.

@PMOIndia

12:11 PM · Sep 24, 2023 · **13K** Views

Dharmendra Pradhan
@dpradhanbjp

#MannKiBaat कार्यक्रम से हमेशा कुछ-न-कुछ सीखने को मिलता है। आज भी देशवासियों के बदलाव लाने की इच्छाशक्ति और प्रेरक प्रयासों के बारे में सुनकर बहुत कुछ सीखने को मिला।

सातवीं कक्षा में पढ़ने वाली बेटी आकर्षणा द्वारा चलाए जा रहे लाइब्रेरी के बारे में जानकर गर्व हुआ। बाल उम्र में गरीब बच्चों का भविष्य संवारने जैसा बड़ा काम करने वाली आकर्षणा समाज के लिए एक आदर्श है।
Translate post

1:38 pm · 24 Sep 2023 · **3,389** Views

Smriti Z Irani
@smritiirani

नैनीताल जिले में युवाओं द्वारा संचालित 'हॉर्स लाइब्रेरी' और हैदराबाद में सातवीं कक्षा की बिटिया आकर्षणा सतीश द्वारा लाइब्रेरी संचालन से संबंधित पहल सराहनीय है।

साक्षरता बढ़ाने और देश की भावी पीढ़ी को शिक्षित करने हेतु ऐसा कर्तव्यबोध, निश्चित रुप से एक मिसाल है। #MannKiBaat
Translate post

5:04 PM · Sep 24, 2023 · **11.7K** Views

Yogi Adityanath @myogiadityanath

भारतीय संस्कृति में स्वच्छता को देव उपासना के समतुल्य माना गया है।

आदरणीय प्रधानमंत्री श्री @narendramodi जी ने आज @mannkibaat कार्यक्रम में गांधी जयंती के उपलक्ष्य में 01 अक्टूबर को आयोजित होने वाले स्वच्छता महाभियान से जुड़ने का आह्वान कर हम सभी को इस पवित्र भावना से जुड़ने का सुअवसर प्रदान किया है।

आइए, प्रधानमंत्री जी के मार्गदर्शन में इस अभियान से जुड़कर 'स्वच्छ भारत-स्वस्थ भारत' हेतु अपना योगदान सुनिश्चित करें।

Translate post

1:22 pm · 24 Sep 2023 · 77.2K Views

Dr Jitendra Singh @DrJitendraSingh

"जहां तक संभव हो, आप, भारत में बने सामानों की खरीदारी करें, भारतीय Product का उपयोग करें और Made in India सामान का ही उपहार दें।"

- पीएम श्री @narendramodi.

#MannKiBaat

Translate post

11:32 am · 24 Sep 2023 · 1,119 Views

DM Sambhal @DmSambhal

माननीय प्रधानमंत्री जी का अपने मन की बात कार्यक्रम में संभल जनपद के उल्लेख हेतु हार्दिक धन्यवाद। यह हमें और बेहतर कार्य करने के लिए प्रेरित करेगा। @CMOfficeUP @ChiefSecyUP @ias_aunjaneya @spgoyal @sanjaychapps1

Translate post

Narendra Modi @narendramodi · Sep 24

आजादी के अमृतकाल में उत्तर प्रदेश के संभल में देश ने कर्तव्य भावना की एक अद्भुत मिसाल देखी। जनभागीदारी से वर्षों पहले विलुप्त हो चुकी सोत नदी को पुनर्जीवित करने का कार्य किया है। यह उदाहरण हमें बताता है कि अगर हम ठान लें तो बड़ी से बड़ी चुनौतियों को पार कर सकते हैं। #MannKiBaat

3:58 PM · Sep 24, 2023 · 4,470 Views

Jagat Prakash Nadda @JPNadda · Following

आज बूथ नं.-154, सरोजिनी नगर मंडल, नई दिल्ली के कार्यकर्ताओं के साथ आदरणीय प्रधानमंत्री श्री @narendramodi जी के 'मन की बात' कार्यक्रम को सुना।

प्रधानमंत्री जी ने #G20 में भारत की ऐतिहासिक सफलता, अमृतकाल में देश के विकास हेतु कर्तव्यबोध की भावना और स्वदेशी के अत्यधिक उपयोग पर अपने बहुमूल्य विचार रखे हैं।

आईए हम सभी मिलकर अपनी सामूहिक शक्ति को राष्ट्र व समाज के उत्कर्ष हेतु समर्पित करें।

Translate Tweet

13:25 · 24 Sept 23 · 31.9K Views

Meenakashi Lekhi @M_Lekhi · Following

Tuned in to the inspiring words of Hon'ble PM Shri @narendramodi Ji's #MannKiBaat at BK Dutt Colony with @BJP4India President @JPNadda Ji & the residents of my Lok Sabha constituency.

Today Prime Minister emphasised that 'Azadi Ka Amrit Kaal' is also 'Kartavya Kaal' for every citizen of the country, his encouraging words motivated us to work hard in the service of our nation.

12:24 · 24 Sept 23 · 4,313 Views

मन की बात • कोबरा मुहिम, हैदराबाद की बच्ची का जिक्र...

मोदी बोले- चंद्रयान-3, जी 20 से भारत ने मनवाया क्षमता का लोहा

भास्कर न्यूज | नई दिल्ली

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने रविवार को रेडियो कार्यक्रम मन की बात के जरिए देश को संबोधित किया। इस कार्यक्रम के 105वें एपिसोड में उन्होंने चंद्रयान-3 और जी20 सम्मेलन की सफलता पर चर्चा की। पीएम ने राजस्थान के पुष्कर में जीव जंतु को बचाने की कोशिश 'ऑपरेशन कोबरा' का भी जिक्र किया। इसके अलावा जर्मनी की 21 साल की दृष्टिहीन कैसमी जो संस्कृत के श्लोक आसानी से गाती हैं और हैदराबाद की 7वीं में पढ़ने वाली आकर्षणा की ओर से लाइब्रेरी खोले जाने का जिक्र किया।

9 वंदे भारत ट्रेन को झंडी दिखाई: पीएम मोदी ने 9 वंदे भारत ट्रेन को वर्चुअली हरी झंडी दिखाई। ये 11 राज्यों को जोड़ती हैं। इनमें तीर्थ, पर्यटन स्थल शामिल हैं।

Trade belt with Middle East, Europe to be commercial cornerstone: PM

Saptarshi Das

letters@hindustantimes.com

NEW DELHI: The India-Middle East-Europe Economic Corridor (IMEC), which was launched during the G20 Summit held in Delhi, will become a cornerstone of global trade for the coming centuries and history will remember that it was envisioned in India, Prime Minister Narendra Modi said on Sunday in the 105th episode of his monthly "Mann ki Baat" broadcast.

IMEC was launched during the G20 Summit on September 11 with the signing of an agreement by India, Saudi Arabia, the EU, the United Arab Emirates, the US and other G20 partners.

The partners will work on linking rail networks and ports to create secure and resilient supply chains.

Addressing the radio programme, Modi recalled the Silk Route, an ancient trade corridor used by India. "When India was very prosperous, the Silk Route was widely discussed in the country and the world. Now, in modern times, India has suggested another economic corridor during the G20. It is the India-Middle East-Europe Economic Corridor. This is going to become the basis of world trade for hundreds of years to come, and history will always remember that this corridor was initiated on Indian soil," he said.

Prime Minister hails Chandrayaan-3 landing, G-20 Summit in *Mann Ki Baat*

The Hindu Bureau

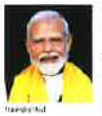

PM calls for one-hr cleanliness drive on Oct 1

'Will Be True Tribute To Bapu On Eve Of His Birth Anniv'

Dipak.Dash@timesgroup.com

New Delhi: Calling upon people across the country to do one hour of "shramdaan" (voluntary labour) for cleanliness on October 1 beginning at 10am, PM Narendra Modi on Sunday said this would be a true tribute to Mahatma Gandhi on the eve of his birth anniversary.

In an effort to encourage mass participation for this "big event" on cleanliness, called Ek Tareekh Ek Ghanta Ek Saath (One Date One Hour Together), the garbage vans used for picking up household waste will make announcements and play jingles, besides special mobile caller tunes will be launched to sensitise people, sources said.

Modi spoke about the event in two programmes — Mann ki Baat and during the launch of Vande Bharat trains. "You can also join this cleanliness campaign in your street, or neighbourhood or at a park, river, lake or any other public place, and cleanliness must be undertaken wherever an Amrit Sarovar has been built," he said.

October 2 will mark the ninth anniversary of Swachh Bharat Mission launched by PM Modi

TOI has learnt that recently cabinet secretary Rajiv Gauba held a marathon meeting with top officials from the Centre and states to make this first such simultaneous cleanliness drive a big success. District administration and urban local bodies have been roped in for this mass activity.

The drive calls upon citizens to join in actual cleaning activities of public places like market spaces, railway tracks, water bodies, tourist locations and religious places, the housing and urban affairs ministry said. Every town, gram panchayat and all sectors of the government will be facilitating cleanliness events led by the citizens, it added. Government entities will spread the message via social media, influencers and brand ambassadors of the Swachh Bharat Mission.

"We have created a website swachhatahiseva.com where all programmes will be available. Government entities will publish the spots where the drive will be undertaken, and even NGOs, RWAs and private entities can apply to hold such programmes," said an official.

The ninth anniversary of the Swachh Bharat Mission launched by PM Modi is on October 2.

കുറഞ്ഞ നിക്ഷേപത്തിൽ കൂടുതൽ അവസരത്തിന് ടൂറിസം: മോദി

15 lakh entries already, PM urges more people to take part in Chandrayaan-3 quiz

New Delhi: With crores of people showing keen interest in India's Chandrayaan-3 mission as they watched its historic landing at the Moon's south pole on August 23, Prime Minister Narendra Modi, in his monthly radio address Mann Ki Baat on Sunday, urged people, especially students, to participate in the ongoing Chandrayaan-3 MahaQuiz even as he expressed happiness that till now over 15 lakh people have already enrolled for the competition, which itself is a record, reports **Surendra Singh**.

On the 105th episode of his his radio show, Modi said, "I have received countless letters from every part of the country, across every section of the society, and people of all ages. When the lander of Chandrayaan-3 was about to land on the Moon, crores of people were simultaneously witnessing each and every moment of this event through different mediums. More than 80 lakh people watched this incident on Isro's YouTube Live Channel; which is a record in itself. This conveys how deep the attachment of crores of Indians is to Chandrayaan-3."

मिसाल : संभल के लोगों ने सोत नदी के पुनरुद्धार का उठाया बीड़ा

पीएम ने कहा, यूपी के संभल में देश ने कर्तव्य भावना की एक मिसाल देखी है। 70 से ज्यादा गांवों के हजारों लोगों ने एक साथ मिलकर जन-भागीदारी और सामूहिकता की बहुत ही शानदार

मिसाल कायम की है। इस क्षेत्र में दशकों पहले, 'सोत' नामक एक नदी हुआ करती थी। समय के साथ नदी का प्रवाह कम हुआ और नदी जिन रास्तों से बहती थी वहां अतिक्रमण हो गया और नदी विलुप्त हो गई। संभल के लोगों ने सोत नदी को पुनर्जीवित करने का संकल्प लिया। सोत नदी का उदाहरण हमें बताता है कि अगर हम ठान लें तो बड़ी से बड़ी चुनौतियों को पार कर एक बड़ा बदलाव ला सकते हैं।

पीएम ने विवि के छात्रों, युवा पेशेवरों को किया आमंत्रित

जी-20 यूनिवर्सिटी कनेक्ट फिनाले आज

पश्चिम बंगाल की शकुंतला सरदार सभी के लिए प्रेरणा

मोदी ने कहा कि शकुंतला सरदार पश्चिम बंगाल के जंगल महल के शातनाला गांव की रहने वाली हैं। लंबे समय तक उनका परिवार हर रोज मजदूरी कर अपना पेट पालता था। फिर उन्होंने एक नए रास्ते पर चलने का फैसला किया और सफलता हासिल कर सबको हैरान कर दिया। एक सिलाई मशीन के जरिये उन्होंने 'साल' की पत्तियों पर खूबसूरत डिजाइन बनाना शुरू किया। उनके इस हुनर ने पूरे परिवार का जीवन बदल दिया।

मन की बात:पर्यटन का एक बहुत बड़ा पहलू रोजगार से जुड़ा : पीएम मोदी

एक तारीख एक घंटा एक साथ

1 अक्टूबर 2023 को सुबह 10 बजे नागरिकों के नेतृत्व में स्वच्छता के लिए एक घंटे के श्रमदान का राष्ट्रीय आह्वान

मन कि बात ના 105માં એપિસોડમાં પીએમ મોદીએ આપ્યું આહવાન

૧ ઓક્ટો. થી દેશભરમાં ચલાવાશે સ્વચ્છતા અભિયાન

ચંદ્રયાન-૩ની સફળતા પછી જી-૨૦ના શાનદાર આયોજને પ્રત્યેક ભારતીયની પ્રસન્નતાને બમણી કરી દીધી: PM મોદી

عالمی تجارت کی بنیاد بنے گی

'ਮਨ ਕੀ ਬਾਤ' ਦੀ 105ਵੀਂ ਕੜੀ

ਭਾਰਤ-ਪੱਛਮੀ ਏਸ਼ੀਆ-ਯੂਰਪ ਗਲਿਆਰਾ ਵਿਸ਼ਵ ਵਪਾਰ ਦਾ ਆਧਾਰ ਬਣੇਗਾ : ਪ੍ਰਧਾਨ ਮੰਤਰੀ ਮੋਦੀ

'गांधी जयंती की पूर्व संध्या पर बापू को अर्पित करें स्वच्छांजलि'

भारत की विविधता का दर्शन करें : पीएम मोदी

नयी दिल्ली 24 सितंबर (वार्ता) प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने रविवार को लोगों से भारत की विविधता का दर्शन करने की अपील करते हुये कहा कि इससे न सिर्फ लोग गौरवशाली इतिहास से परिचित होंगे बल्कि स्थानीय लोगों की आय बढ़ाने का भी अहम माध्यम बनेंगे.

मोदी ने आकाशवाणी पर अपने मासिक कार्यक्रम मन की बात की 105 वीं कड़ी में राष्ट्र को संबोधित करते हुये कहा कि कर्नाटक के होयसला मंदिरों को यूनेस्को ने विश्व धरोहर सूची में शामिल किया है, उन्हें 13वीं शताब्दी के बेहतरीन वास्तुशिल्प के लिए जाना जाता है. इन मंदिरों को यूनेस्को मान्यता मिलना, मंदिर निर्माण की भारतीय परंपरा का भी सम्मान है. भारत में अब विश्व धरोहर संपदा की कुल संख्या 42 हो गई है.

भारत का प्रयास है कि हमारे ज्यादा-से-ज्यादा ऐतिहासिक और सांस्कृतिक जगहों को यूनेस्को से मान्यता मिले. उन्होंने कहा, मेरा आप सबसे आग्रह है कि जब भी आप कहीं घूमने जाने की योजना बनाएं तो ये प्रयास करें कि भारत की विविधता के दर्शन करें, आप अलग-अलग राज्यों की संस्कृति को समझें, धरोहर स्थलों को देखें.

इससे, आप अपने देश के गौरवशाली इतिहास से तो परिचित होंगे ही, स्थानीय लोगों की आय बढ़ाने का भी आप अहम माध्यम बनेंगे.

30 हजार से ज्यादा साँपों का बचाया जीवन

उन्होंने कहा कि ऐसा ही एक अनोखा प्रयास राजस्थान के पुष्कर में भी किया जा रहा है. यहाँ सुखदेव भट्ट और उनकी टीम मिलकर वन्य जीवों को बचाने में जुटे हैं और उनकी टीम का नाम कोबरा है. ये खतरनाक नाम इसलिए है क्योंकि उनकी टीम इस क्षेत्र में खतरनाक साँपों को बचाने का काम भी करती है. इस टीम में बड़ी संख्या में लोग जुड़े हैं, जो सिर्फ एक कॉल पर मौके पर पहुंचते हैं और अपने मिशन में जुट जाते हैं. सुखदेव जी की इस टीम ने अब तक 30 हजार से ज्यादा जहरीले साँपों का जीवन बचाया है. इस प्रयास से जहाँ लोगों का खतरा दूर हुआ है.

विश्व व्यापार का आधार बनेगा आर्थिक गलियारा

मन की बात जी20 में किए फैसलों ने देश का लोहा मनवाया : मोदी

सॉलिडिटी की तरह हो गया है भारत मंडपम

'भारताच्या नेतृत्वावर जगाचे शिक्कामोर्तब'

'मन की बात'मध्ये मोदी यांची भावना

'जी २०'त तरुणांचे योगदान महत्त्वाचे

पर्यटन दिनाचे महत्त्व

चंद्रयान-3 से जुड़ी भारतीयों की भावना जी-20 ने देश का लोहा मनवाया : मोदी

मन की बात : पीएम बोले, भारत-पश्चिम एशिया-यूरोप कॉरिडोर व्यापार का बनेगा आधार

कल जी-20 यूनिवर्सिटी कनेक्ट प्रोग्राम से जुड़ें

नैनीताल में चल रही घोड़ा लाइब्रेरी

जर्मनी की कैसमी भारतीय संगीत की मुरीद

मिसाल : संभल के लोगों ने सोत नदी के पुनरुद्धार का उठाया बीड़ा

पश्चिम बंगाल की शकुंतला सरदार सभी के लिए प्रेरणा

भारतीय संस्कृतीची लोकप्रियता जगभरात वाढू लागली

THE TIMES OF INDIA

Crores watched historic Moon landing, shows deep attachment to Chandrayaan-3: PM Modi in Mann ki Baat; urges people to participate in MahaQuiz

आजतक

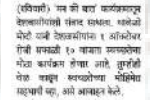

आजकल किन बातों को लेकर मिलते हैं सबसे ज्यादा पत्र? PM मोदी ने 'मन की बात' में बताया

The Indian EXPRESS

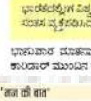

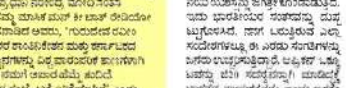

India-Middle East-Europe corridor to become basis of world trade for centuries: PM Modi on Mann Ki Baat

हिन्दुस्तान

पीएम मोदी ने मन की बात में 'घोड़ा लाइब्रेरी' की तारीफ की, इसकी खासियत कर देगी आपको हैरान!

THE ECONOMIC TIMES

PM Modi invites university students, young professionals to G-20 University Connect Finale

दैनिक भास्कर

PM मोदी ने जीवनदायिनी 'सोत नदी' का किया जिक्र: ''मन की बात'' में बोले- संभल ने दिखाई कर्तव्य भावना की मिसाल, बदायूं में लोगों में हर्ष

Hindustan Times

Mann Ki Baat: Why did PM Modi mention German singer Cassandra Mae Spittmann in 105th episode?

मन की बात

के सभी संस्करणों को पढ़ने के लिए
QR कोड को स्कैन करें।

सत्यमेव जयते

सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय

भारत सरकार